R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

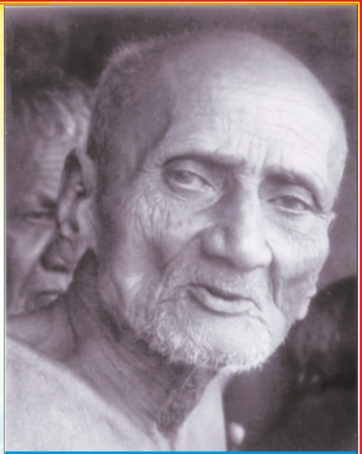

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

धर्म या तमाशा पृष्ठ 07 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 35 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 30 जून 2025, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

आचार्यश्री विशुद्ध सागरजी ससंघ की सागर में हुई भव्य आगवानी

मनीष जैन विद्यार्थी, सागर

सागर। परम पूज्य आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के परम प्रभाकर शिष्य परम पूज्य चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ससंघ का मंगल विहार श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर आदर्श रेजिडेंसी भोपाल रोड से 26 जून को सुबह 6:00 भाग्योदय तीर्थ के लिए हुआ, डीजे, बैंड बाजे एवं हजारों की संख्या में धर्म प्रेमी जन साथ चल रहे थे। जगह-जगह रंगोली एवं पाद प्रक्षालन, हाथ में थाल कलश लेकर घर के द्वारों पर लोग आचार्य संघ की प्रतीक्षारत में खड़े हुए थे। सागर विधायक शैलेंद्र जैन के द्वारा भी साज सज्जा, स्वागत गेट एवं आचार्य श्री को श्रीफल भेंटकर आदर्श रेजिडेंसी पहुंचकर आशीर्वाद लिया एवं बिहार में साथ भी चले।

शेष पृष्ठ 03 पर..........

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
7 खुबसूरत देशो की सैर
10 Sep, 23 Sep, 25 Oct, 14 Nov
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND
VAYUDOOT
WORLD TRAVELS PVT. LTD.
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

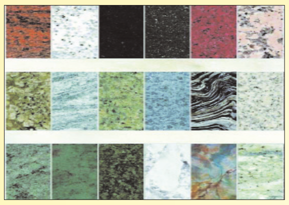

इंडियन इम्पोर्टेड ग्रेनाइट मार्बल्स
(सभी प्रकार के मार्बल्स को खरीदने के लिए सम्पर्क करें)
❑ तिलक मार्बल्स (प्रा.) लि. ❑ तिलक मार्बल्स, तिलक ग्रैनाइट्स ❑ श्री रघुपति कोटेक्स पाटन
❑ तिलक मार्बल्स एण्ड हैण्डीक्राफ्ट्स ❑ तिलक स्टोन आर्टस इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर ❑ तिलक हैण्डीक्राफ्ट्स
❑ शाश्वत मार्बल्स एण्ड हैण्डीक्राफ्ट्स ❑ राजीव मार्बल्स एण्ड इंजीनियर्स, समस्त तिलक ग्रुप
सम्पर्क अधिकारी: शेखर चन्द पाटनी, 9667168267, 8003892803 ईमेल - rkpatni777@gmail.com

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

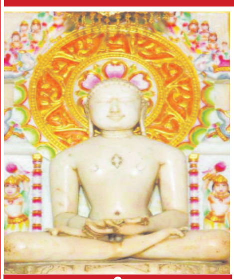

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।
हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री)
9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष)
095880-20330

JK MASALE SINCE 1957
Buy online on jkcart.com

– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

स्थापित श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2421 सन् 1894 Estd. 1895

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

(धर्म, तीर्थ, श्रुत, महिला, युवा)

Khandelwal Digamber Jain Mandir Complex, Raja Bazar, Connaught Circus New Delhi-110001,
Office: +91-11-2334 4668, 2334 4669
Email: digjainmahasabha@gmail.com, Website: www.digjainmahasabha.org

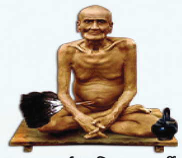

प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांति सागर जी महाराज

जैन पंचांग

जुलाई 2025

दिनांक	चंद्र संचार	जाप	बैंक
1	कन्या 15/24		
2	कन्या		
3	तुला 27/19		
4	तुला		
5	तुला		
6	वृश्चिक 16/01		
7	वृश्चिक		
8	धनु 27/15		
9	धनु		
10	धनु		
11	मकर 12/08		
12	मकर		
13	कुंभ 18/53		
14	कुंभ		
15	मीन 23/58		
16	मीन		
17	मेष 27/39		
18	मेष		
19	मेष		
20	वृष 06/12		
21	वृष		
22	मिथुन 08/15		
23	मिथुन		
24	कर्क 10/59		
25	कर्क		
26	सिंह 15/52		
27	सिंह		
28	कन्या 24/00		
29	कन्या		
30	कन्या		
31	तुला 11/15		

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. 2–11/07 बजे से 29/46 बजे तक। ता. 5–05/47 बजे से 19/51 बजे तक । ता. 7–05/48 बजे से 25/12 बजे तक। ता. 12–06/36 बजे से 29/50 बजे तक । ता. 17–05/52 बजे से 29/52 बजे तक। ता. 18–05/52 बजे से 26/14 बजे तक । ता. 21–05/53 बजे से 29/54 बजे तक । ता. 24–05/55 बजे से 29/55 बजे तक। ता. 30–05/57 बजे से 21/53 बजे तक।

सूर्योदय सूर्यास्त

ता.	सूर्योदय	सूर्यास्त
5	05.47	19.16
10	05.49	19.15
15	05.51	19.14
20	05.53	19.13
25	05.55	19.11
30	05.57	19.09

1 जुलाई सूर्योदय का लग्न चक्र

मं. चं. 5 के.	4 बु. 3 गु. सू. 2 शु.	1
6		12 श.
7 8	9	10 11 रा.

पंचक

ता. 13–18/53 बजे से ता. 17–27/39 बजे तक।

☽ सूर्योदय के समय बांया स्वर रहेगा ।
☀ सूर्योदय के समय दांया स्वर रहेगा ।

वार					
रवि	 मुनि श्री वीरसागरजी	आषाढ शुक्ल 11 ☀ 21/14 उत्पात **6** विशाखा 22/42 त्रिपुष्कर योग सूर्य पुनर्वसु में शासकीय अवकाश	श्रावण कृष्ण 3 ☀ 25/02 गद **13** श्रवण 06/53 पंचक	श्रावण कृष्ण 10 ☽ 12/12 शुभ **20** कृत्तिका 22/53	श्रावण शुक्ल 3 ☽ 22/41 मुद्गर **27** मघा 16/23 गणतंत्र दिवस
सोम	 प.पूज्य मुनि श्री निःस्वार्थ सागर जी	आषाढ शुक्ल 12 ☀ 23/10 मानस **7** अनुराधा 25/12	श्रावण कृष्ण 4 ☽ 23/59 शुभ **14** धनिष्ठा 06/49 पंचक	श्रावण कृष्ण 11-12 ☽ 09/38-31/05 वर्धमान **21** रोहिणी 21/07	श्रावण शुक्ल 4 ☀ 23/24 छत्र **28** पू.फा. 17/35
मंगल	आषाढ शुक्ल 6 ☀ 10/20 शुभ **1** पू.फा. 08/54 त्रिपुष्कर योग	आषाढ शुक्ल 13 ☽ 24/38 मुद्गर **8** ज्येष्ठा 27/15 गुरु उदय	श्रावण कृष्ण 5 ☽ 22/38 स्थिर **15** शत.–पू.भा. 06/26–29/44 पंचक	श्रावण कृष्ण 13 ☀ 28/39 राक्षस **22** मृगशिरा 19/24 द्विपुष्कर योग	श्रावण शुक्ल 5 ☀ 24/46 प्रजापति **29** उ.फा. 19/27
बुध	आषाढ शुक्ल 7 ☽ 11/58 वर्धमान **2** उ.फा. 11/07	आषाढ शुक्ल 14 ☽ 25/36 ध्वज **9** मूल 28/50 चातुर्मास प्रारंभ	श्रावण कृष्ण 6 ☽ 21/02 कालदण्ड **16** उ.भा. 28/50 पंचक सूर्य कर्क में	श्रावण कृष्ण 14 ☀ 26/28 मृत्यु **23** आर्द्रा 17/54	श्रावण शुक्ल 6 ☀ 26/41 आनन्द **30** हस्त 21/53
गुरु	आषाढ शुक्ल 8 ☽ 14/06 राक्षस **3** हस्त 13/50 अष्टान्हिका व्रत प्रा.	आषाढ शुक्ल 15 ☽ 26/06 प्रजापति **10** पू.षा. दिन–रात पूर्णिमा अष्टान्हिका व्रत पूर्ण	श्रावण कृष्ण 7 ☀ 19/08 मित्र **17** रेवती 27/39 पंचक	श्रावण कृष्ण 30 ☀ 24/40 सिद्धि **24** पुनर्वसु 16/43 अमावस गुरु–पुष्य योग	श्रावण शुक्ल 7 ☽ 28/58 चर **31** चित्रा 24/41 मोक्ष सप्तमी
शुक्र	आषाढ शुक्ल 9 ☽ 16/31 मुसल **4** चित्रा 16/50	श्रावण कृष्ण 1 ☀ 26/08 वर्धमान **11** पू.षा. 06/56 युग परिवर्तन दि. वीर शासन ज.	श्रावण कृष्ण 8 ☀ 17/01 चर **18** अश्विनी 26/14	श्रावण शुक्ल 1 ☽ 23/22 उत्पात **25** पुष्य 16/00	 प.पू. मुनिश्री संधानसागरजी
शनि	आषाढ शुक्ल 10 ☀ 18/58 सिद्धि **5** स्वाती 19/51	श्रावण कृष्ण 2 ☀ 25/46 चर **12** उ.षा. 06/36 त्रिपुष्कर योग	श्रावण कृष्ण 9 ☀ 14/41 ध्वांक्ष **19** भरणी 24/37 सूर्य पुष्य में	श्रावण शुक्ल 2 ☽ 22/41 मानस **26** आश्लेषा 15/52	 प.पू. आर्यिका प्रशांतमतिजी

तीर्थंकर दर्पण

1	भ. महावीर स्वामीजी	–गर्भ
2	भ. नेमिनाथजी	–मोक्ष
12	भ. मुनि सुव्रतनाथजी	–गर्भ
20	भ. कुंथुनाथजी	–गर्भ
26	भ. सुमतिनाथजी	–गर्भ
30	भ. नेमिनाथजी	–जन्म–तप
31	भ. पार्श्वनाथजी	–मोक्ष

आचार्य दर्पण

6	आचार्यश्री शिवसागरजी	–मुनि दीक्षा
9	ऐलक सिद्धांतसागरजी	–ऐलक दीक्षा
10	मुनिश्री संधानसागरजी	–मुनि दीक्षा
28	मुनिश्री निःस्वार्थसागरजी	–मुनि दीक्षा
30	मुनिश्री वीरसागरजी	–मुनि दीक्षा
30	आर्यिकाश्री प्रशान्तमतिजी	–आर्यिका दीक्षा
30	आर्यिकाश्री पूर्णमतिजी (भाद्र 28)	–आर्यिका दीक्षा
30	क्षुल्लक तत्वसागरजी	–क्षुल्लक दीक्षा

माह के प्रमुख व्रत

2 णमोकार पैतीसी व्रत प्रारंभ
3 अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
6 रविव्रत प्रारंभ
9 चातुर्मास कलश स्थापना (चातुर्मास प्रारंभ)
9 कर्म निर्जरा व्रत
10 अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
11 वीर शासन जयंती / युग परिवर्तन दिवस
12 रत्नावली–एकावली–द्विकावली
13,20, 27 रविव्रत
21 रोहिणी व्रत
25 सप्तमपरमस्थान व्रत प्रारंभ
25 सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष प्रा.
31 सप्तपरमस्थान व्रत पूर्ण
31 मोक्ष सप्तमी

माह के शुभ मुहूर्त

नवीन गृह प्रवेश– 7,21,31
घर नवीनीकरण– 2,3,5, 11,12,16,17,18,21,30,31
पुराने/किराये के घर में प्रवेश– 11,12,14,17,21,24, 25,28,30,31
वाहन खरीदी– 2,3,7,13, 17,18,25,30,31
घर जमीन खरीदना– 7,10, 17,25,26,27
नमशीनरी प्रारंभ– 3,17,18, 30,31
शिशु को प्रथम देवदर्शन– 2,7, 11,13,17,21,25,31
मुण्डन– 2,3,5,12,13, 17,18,31
दुकान या कार्यालय प्रारंभ– 12,16,17,18,25,30,31
नामकरण– 2,7,16,17, 21,25,30,31
अक्षारंभ– 5,7,12
शिलान्यास– 17,21,31
शैक्षणिक संस्था में प्रवेश– 2, 13,17,27,30,31
ट्यूबवेल कूप खनन– 2,7, 14,16,21
शल्य चिकित्सा– 2,5,11, 12,13,19,20,21,25,31
नवीन वस्त्राभूषण– 2,3,4, 17,18,30,31
औषधी सेवन– 2,4,5,7,12, 13,14,17,24,25,30,31
वेदी प्रतिष्ठा मुहूर्त– 11 जुलाई से 13 जुलाई तक।

समाज की। समाज द्वारा। समाज के लिए

djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha digjainmahasabha.org

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES

SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD

ANAMICA TRADERS PVT. LTD.

L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

हाईकोर्ट के न्यायाधिपति संजय द्विवेदी ने आचार्य समय सागरजी से लिया आशीर्वाद

अभी आचार्य श्री प्रतिभास्थली, दयोदय तीर्थ क्षेत्र, तिलवारा घाट, जबलपुर में विराजमान हैं। माननीय न्यायाधिपति की आचार्य श्री से हुई राष्ट्रीय विषयों पर गहन चर्चा।

शेष पृष्ठ 1 का.....

भाग्योदय तीर्थ कमेटी द्वारा आचार्य श्री की भव्य आगवानी की, आचार्य श्री ने जिन मंदिर के दर्शन कर, निर्माणाधीन सहस्त्रकूट जिनालय का अवलोकन किया। आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य महेश बिलहरा परिवार को मिला एवं शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य प्रमोद जैन बारदाना परिवार को, कार्यक्रम का चित्रानावरण, दीप प्रज्वलन महेश बिलहरा, कपिल मलैया, संतोष जैन घडी, जैन पंचायत एवं भाग्योदय ट्रस्ट कमेटी के पदाधिकारियों ने किया। संचालन मुकेश जैन ढाना ने किया। भाग्योदय तीर्थ और सहस्त्रकूट जिनालय और आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के द्वारा जो भी उनकी प्रेरणा से कार्य हुए हैं या चल रहे हैं उन सभी को प्रगति के पद पर बढ़ाते रहने की जिम्मेदारी, उनसे जुड़ें लोगों की है, जब भी इसका पंचकल्याणक हो तो इतिहास बने और इससे प्रेरणा मिले यह आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने भाग्योदय में अपने मंगल प्रवचन में कहा। भाग्योदय तीर्थ से आचार्य श्री का विहार श्री गौराबाई दिगंबर जैन मंदिर कटरा के लिए हुआ, वर्णी संस्थान विकास सभा के अध्यक्ष डॉ. हरिश्चंद्र शास्त्री, महामंत्री कैलाश जैन टीला, उदासीन आश्रम के मंत्री प्राचार्य डॉ. पी. सी. जैन, भारतीय जैन मिलन क्षेत्रीय अध्यक्ष अरुण चंदेरिया ने पाद प्रक्षालन एवं आचार्य श्री की आरती की। श्री दिगंबर जैन गौराबाई मंदिर प्रांगण में आचार्य श्री के मंगल प्रवचन, आहारचर्या आदि संपन्न हुई। 27 जून सुबह आचार्य ससंघ का बिहार अंकुर कॉलोनी मकरोनिया के लिए हुआ एवं यहां पर आलोक जैन वरायठा परिवार द्वारा आयोजित श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान 28, 29 जून में मंगल सान्निध्य रहा। आचार्य श्री आगवानी सकल दिगंबर जैन समाज सागर एवं क्षेत्रीय समाज के सहयोग से अति भव्य रूप से हुई। विशुद्ध सागर जी महाराज के साथ 26 मुनि संघ हैं, जिनका चातुर्मास विरागोदय तीर्थ पथरिया जिला दमोह में संपन्न होगा।

परम गोसेवक श्री प्रेमचंद जैन 'प्रेमी' को मध्य प्रदेश शासन द्वारा अलंकृत किया गया

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित एक भव्य एवं गरिमामय समारोह में दयोदय महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष परम श्रद्धेय श्री प्रेमचंद जैन 'प्रेमी' (कटनी) को गौ-सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु मध्य प्रदेश शासन द्वारा ''श्रंमण संस्कृति महामहिम संत आचार्य विद्यासागर जीव दया सम्मान-2025'' प्रदान किया गया। यह सम्मान मध्य प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा व्यक्तिगत श्रेणी में प्रथम पुरस्कार के रूप में एक लाख रुपये की राशि के साथ श्री प्रेमी जी को भरे जनसमूह के बीच प्रदान किया गया। इस अवसर पर पशुपालन मंत्री श्री लखन पटेल, सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग सहित प्रदेश भर के प्रशासनिक अधिकारी, गौशाला संचालक, प्रतिनिधिगण एवं गौसेवक उपस्थित रहे। इस महत्वपूर्ण अवसर पर यह भी उल्लेखनीय रहा कि श्री प्रेमचंद जी ने पुरस्कार स्वरूप प्राप्त पूरी राशि राजधानी भोपाल में विराजित पूज्य मुनिश्री प्रमाण सागर जी महाराज की साक्षी में पुनः दयोदय महासंघ को समर्पित कर दी, जो उनके सेवाभाव, विनम्रता एवं समर्पण का अनुकरणीय उदाहरण है। दयोदय महासंघ के मार्गदर्शन में वर्तमान में 150 से अधिक गौशालाओं का संचालन हो रहा है। इसके अंतर्गत भारत-बांग्लादेश सीमा पर, जहां कभी बड़े स्तर पर गौ-तस्करी होती थी, वहाँ पूज्य मुनिश्री 108 प्रमाण सागर जी की प्रेरणा एवं श्री प्रेमी जी के मार्गदर्शन में 25,000 से अधिक गौ-वंशों के भरण-पोषण हेतु गौशालाएं स्थापित की गई हैं। उक्त जानकारी देते हुए वर्धमानपुर शोध संस्थान के ओम पाटोदी एवं दयोदय गौशाला, वर्धमानपुर बदनावर के अध्यक्ष राजेश मोदी ने कहा कि यह हमारे लिए गर्व, आनंद और आत्मिक संतोष का विषय है कि आपके मार्गदर्शन में ही वर्धमानपुर की दयोदय गौशाला, जो आदरणीय श्री अशोक जी पाटनी (आर. के. मार्बल परिवार) के सहयोग से निर्मित होकर सुचारु रूप से संचालित हो रही है, वह आपकी जीवदया भावना के संकल्पों की जीवंत प्रतिमा बनकर खड़ी है। आपका सदैव प्राप्त सान्निध्य और मार्गदर्शक ऊर्जा हमें इस पुनीत कार्य में संबल प्रदान करती है। आपके मार्गदर्शन से प्रेरणा लेकर हम सभी कार्यकर्ता यह संकल्प दोहराते हैं कि गौ माता, जीव दया और मानवीय सेवा के पवित्र लक्ष्यों को लेकर हम सतत आगे बढ़ते रहेंगे। श्री प्रेमी जी केवल मार्गदर्शक ही नहीं, हमारी गौशाला के एक आत्मीय परिवारजन के रूप में सदैव जुड़े रहे हैं। उनकी प्रेरणा से यह प्रकल्प सतत सेवा पथ पर अग्रसर है। इस सम्मान को लेकर दयोदय गौशाला, वर्धमानपुर शोध संस्थान, जैन समाज बदनावर, बड़नगर सहित गौसेवकों में गौरव, हर्ष और आत्मीय आनंद की लहर दौड़ गई है।

दुर्घटना में मुनि श्री घायल

आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के शिष्य परम पूज्य मुनि श्री शाश्वत सागर जी महाराज का दिनांक 26.6.2025 को सुबह 5:30 बजे सुरेंद्रनगर से गिरनार की तरफ बिहार करते हुए सामने से आते हुए ट्रक से एक्सीडेंट होने के कारण काफी ज्यादा चोटिल हो गए।

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्षण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में विराजमान हैं

शशांक वाणी

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन, ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन

– किसी को कोसो नहीं बल्कि अच्छे कार्य की कोशिश कीजिये
– गलती चलती नहीं बल्कि फलती है

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चैक, जयपुर)

1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3.भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)
4. श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

भौतिक सुख सुविधाओं से सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं
जीवन में सजग रहने के लिए धर्म के ज्ञान का होना आवश्यक
मुनि वैराग्य सागर जी व मुनि सुप्रभ सागरजी वर्ष 2025 का चातुर्मास देवपुरा बून्दी में

रविन्द्र काला, संवाददाता

बूंदी, 24 जून। परम पूज्य आचार्य सुमति सागर महाराज के परम शिष्य मुनि श्री वैराग्य सागर एवं परम पूज्य आचार्य वर्धमान सागर के धर्म प्रभावक शिष्य सुप्रभ सागर महाराज का वर्ष 2025 का चातुर्मास देवपुरा बून्दी में होगा। दोनों मुनि महाराजों का मंगल प्रवेश 23 जून को मधुबन कॉलोनी में स्थित मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में हुआ। यहां पर मुनिराज धर्म की प्रभावना करते हुए रजतगृह कॉलोनी के साथ साथ नागदी बाजार में भी धर्म प्रभावना करेंगे। उसके बाद 7 जुलाई को चातुर्मास हेतु नागदी बाजार से भव्य जुलूस के साथ देवपुरा बून्दी में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश होगा। इसी क्रम में मधुबन कॉलोनी में स्थित मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रवचन देते हुए मुनि सुप्रभ सागर महाराज ने कहा कि आज का व्यक्ति भौतिक सुख सुविधाओं से अपनी पहचान मानता है जबकि सही अर्थ में आत्मा की पहचान करना चाहिए। आत्मा की पहचान करने के लिए ज्ञान का अर्जन करना चाहिए तथा ज्ञान के अर्जन के लिए मनुष्य को सजगता लानी चाहिए। उन्होंने धर्मसभा में कहा कि आज मनुष्य भौतिकता की ओर अपने जीवन को लेकर जाता है। लेकिन असल में आत्मकल्याण ही सत्य मार्ग है। जो विपरीत ज्ञान को रखता है वह व्यक्ति अज्ञानी है। वैराग्य सागर महाराज ने धर्म सभा में कहा कि देव शास्त्र गुरु की भक्ति करने पर सुंदर रूप की प्राप्ति होती है। श्रावक को परिवार में रहकर भी षष्ट आवश्यक का पालन करना चाहिए। रागी व्यक्ति सदैव संक्लेश में जीवन जीता है। चंचल मन कभी आत्म शांति की प्राप्ति नहीं कर सकता। इस अवसर पर दीप प्रज्वलन दुर्लभ जठयानीवाल एवं राजकुमार जैन ने किया। मुनिश्री को शास्त्र भेंट रविन्द्र काला, रमेश बडजात्या ने किया। मंगलाचरण शकुंतला बड़जात्या ने किया एवं धर्म सभा का संचालन नमन जैन ने किया।

आचार्यश्री सुंदर सागरजी व मुनिश्री प्रज्ञान सागरजी का युगल मिलन देखने को उमढ़ा जैन समाज नैनवां

महावीर कुमार जैन सरावगी, नैनवां

नैनवां जिला बूंदी, 22 जून। रविवार प्रातः 7:30 पर महान तपस्वी राष्ट्रीय संत आचार्य सुंदर सागर महाराज ससंघ एवं जैन मुनि प्रज्ञान सागर महाराज का युगल मिलन बड़े तालाब के पास हुआ। संपूर्ण जैन समाज ने राष्ट्रीय संत की आगवानी में मुनिश्री के सानिध्य में बैंडबाजा, महिला मंडल युवाओं के जय जयकार के साथ मुनिश्री की भव्य आगवानी की। धर्म सभा से पूर्व मंदिर में भगवान महावीर के चित्र पर दीप प्रज्वलित करने का सौभाग्य भीलवाड़ा निवासी सुमति पाटनी, अभिषेक जैन द्वारा किया गया। मुनिश्री के पाद प्रक्षालन रमेश कुमार ललित कुमार मुकेश बंटी जैन मितल द्वारा किया गया। शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य पारस कुमार हितेश कुमार जैन बरमुंडा परिवार ने किया। धर्म सभा में मंगलाचरण की प्रस्तुति पिंकी जैन ने की। आचार्य श्री सुंदर सागर महाराज ने बताया कि नैनवां हमारे गुरु आचार्य तपस्वी समाधि सम्राट सन्मति सागर महाराज 1992 में नैनवां आए थे, हमारा इस नगर में प्रवेश के लिए आपके यहां वर्षायोग कर रहे मुनि 108 प्रज्ञान सागर जी महाराज से मिलने की तीव्र अभिलाषा थी इसलिए हमने नैनवां का चयन किया। उन्होंने बताया शरीर मोटा पतला होता है, आत्मा कभी मोटी नहीं होती।

संत के आने से सोना सोना हो जाता है संत के जाने से सूना सूना हो जाता है
मानव पर्याय दुर्लभ चिंतामणि रत्न के समान-विभाश्री माताजी

पारस जैन 'पार्श्वमणि', संवाददाता

कोटा। आर के पुरम स्थित 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ त्रिकाल चौबीसी जैन मंदिर में गुरु मां विभा श्री माताजी माताजी ने विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जिस नगर के लोगों का महान सातिशय पुण्य का उदय होता है उस नगर में संतों का आगमन होता है। जीवन में सब कुछ सुलभ है, संत समागम दुर्लभ है। संत जहां पर आते हैं वहां सोना सोना हो जाया करता है। संत जहां से जाते हैं वहां सूना सूना हो जाया करता है। मानव पर्याय महान दुर्लभ चिंतामणि रत्न के समान है। चौरासी लाख गतियों में भटकने के बाद इस दुर्लभ मानव पर्याय को प्राप्त करके सच्चे देव शास्त्र गुरु की सेवा भक्ति श्रद्धा समर्पण के साथ करना चाहिए। मानव पर्याय का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। जीवन में देव शास्त्र गुरु की सेवा करतेहुये आगे चलकर निर्ग्रथ और अरिहंत पद की प्राप्ति भी की जा सकती है।

मंदिर समिति के अध्यक्ष अंकित जैन ने बताया कि एल आई सी बिल्डिंग से भव्य जुलूस शोभायात्रा के साथ अपार जन सैलाब के साथ गुरु मां विभाश्री माता जी (13 पिच्छिका) ससंघ मंदिर परिसर पहुंचा। रास्ते में संगीत की सुमधुर ध्वनियों के साथ श्रद्धालुओं ने जमकर भक्ति नृत्य किया। जगह जगह स्वागत द्वारा बनाए गए जहां भक्तों ने गुरु मां का पाद प्रक्षालन कर मंगल आरती की। मंदिर समिति के कोषाध्यक्ष ज्ञानचंद जैन, महामंत्री अनुज गोधा ने बताया कि धर्म सभा में मंगल दीप प्रज्वलन एवं शस्त्र भेंट करने का सौभाग्य ज्ञानचंद जैन संजय जैन तृप्ति जैन परिवार जन को प्राप्त हुआ। मंदिर समिति के प्रचार प्रसार मंत्री पारस जैन "पार्श्वमणी" ने बताया कि धर्म सभा के प्रारंभ में मंगलाचरण पाठ नन्हीं नन्हीं बच्चियों द्वारा भावपूर्ण मुद्रा में किया गया। धर्म सभा में सकल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष प्रकाश बज, महामंत्री पदम बडला, कोषाध्यक्ष जितेंद्र हरसोरा, जे के जैन, लोकेश बरमूडा, पारस जैन, पंकज जैन, पदम जैन, अनिल ठोरा, चंद्रेश जैन, रितेश सेठी, लोकेश जैन सीसवाली सहित सैकड़ों श्रावक श्रेष्ठी उपस्थित थे। मंदिर समिति के कार्याध्यक्ष प्रकाश जैन ने बताया कि प्रातःकाल अभिषेक के बाद विश्व शांति की मंगल कामना के साथ शांतिधारा की गई। पूज्य गुरु मां विभा श्री माताजी ने अपनी मधुर आवाज में धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आपके पास यदि साधन है तो उसका उपयोग धर्म कार्य में करना चाहिए, पाप कार्य में नहीं। जीवन में पल कल का कोई भरोसा नहीं। एक सांस के बाद तुम दूसरी सांस ले पाओगे, इसकी भी कोई गारंटी नहीं है। जीवन सदैव सकारात्मक रहे, गतिशील रहे।

आचार्य विनीत सागर महाराज का डीग में होगा चातुर्मास

रविन्द्र काला, संवाददाता

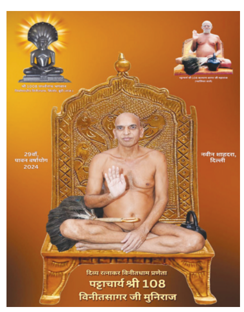

बूंदी/डीग, 24 जून। वात्सल्य दिवाकर प्रज्ञाश्रमण परम पूज्य आचार्य 108 श्री कल्याण सागर जी मुनिराज के पट्टशिष्य पट्टाचार्य परम पूज्य बा. ब्र. वात्सल्य मूर्ति विनीत धाम प्रणेता आचार्य श्री विनीत सागर महाराज ससंघ का वर्ष 2025 का चातुर्मास राजस्थान के जलमहलों की नगरी डीग में होने जा रहा है। विनीत धाम से जुड़े रविन्द्र काला ने बताया कि आचार्य श्री का 30वां पावन वर्षायोग 2025 डीग के पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, जैन गली (मुजेर वाली) में होगा। कलश स्थापना 13 जुलाई 2025 को प्रातः 9:15 बजे होगी। आचार्यश्री का भव्य मंगल प्रवेश गुरु पूर्णिमा के दिन गुरुवार 10 जुलाई को 9:15 बजे होगा।

मधु बोहरा कालू 'अनूठा डॉक्टर' की उपाधि से अलंकृत

राजस्थान में तीर्थ वन्दना करते हुए गणिनी आर्यिका 105 विमल प्रभा माता जी संघ का आगमन कालू में हुआ। यह छोटा सा गाँव है पर इस भूमि की ऊर्जा- अति बलिष्ठ है। इस गांव के निवासी श्रेष्ठि रत्न महावीर जी बोहरा हैं। उन्होंने और उनकी धर्मपत्नी मधु बोहरा से इस भूमि का अतिशय सुवर्णिम इतिहास ज्ञात हुआ। बड़े-बड़े तपस्वियों ने अपनी साधना से इस भूमि को पवित्र किया है। मधु बोहरा जी यद्यपि श्राविका हैं पर इनकी साधना बेजोड़ है। मंत्र जाप एवं ध्यान साधना से प्रगट हुई कुछ शक्तियां आप में ऐसी हैं जो अन्य में नहीं देखी गई। आप बिना दवा के हीलिंग देकर असाध्य से असाध्य रोगों को दूर कर देती हैं ऐसा प्रत्यक्ष देखा है। एक श्रेष्ठी पुत्र जयपुर में तीन मंजिल मकान की छत से नीचे गिर गया। डॉ. इलाज करने में समर्थ नहीं थे। पर भक्तामर मंत्र से हीलिंग देकर आपने उनको स्वस्थ कर दिया। आचार्य श्री वर्धमान सागरजी के पैर में गहरी चोट आ गई थी तब आपके द्वारा हीलिंग से उन्हें भी स्वास्थ्य लाभ हुआ। हमारे संघ में भी आपसे इस प्रकार का लाभ मिलता रहा है। आपने कषाय और इन्द्रियों का शमन और दमन किया तभी तो ऐसी ऋद्धि सिद्धियाँ आपमें प्रगट हुई। डिग्रियों के बिना भी यदि हम मधु बोहरा को राजस्थान का अनूठा डॉक्टर कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। आर्यिका संघ के द्वारा आपको "अनूठा डॉक्टर" उपाधि से अलंकृत किया गया।

– शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

जैन कुल मिलना महादुर्लभ

-प्रदीप चौधरी, हमीर कॉलोनी

मदनगंज-किशनगढ़। एक सेकंड में 100 अरब जीवों का जन्म होता है। उसमें से 99 अरब जीव तिर्यंच गति में जाते है। बचे हुए 1 अरब में से 99 करोड़ जीव देव गति में जाते हैं और जो 1 करोड़ बचे हैं उनमें से 99 लाख जीव नरक गति में जाते है। बचे हुए 1 लाख में से 99 हजार जीव सम्मूर्च्छन मनुष्य में उत्पन्न होते हैं। बचे हुए 1 हजार में से 900 जीव अनार्य देश में जन्म लेते हैं। अब जो 100 जीव बचते हैं उनमें 99 जीव अजैन कुल में जन्म लेते हैं और बचा हुआ 1 जीव यानि हमारा स्वयं का, जिसको 100 अरब में से जैन कुल में आर्य क्षेत्र में जन्म मिला। सोचो दुर्लभ मनुष्य भव में 100 अरब में हमारी पसंदगी हुई। अनंतानंत पुण्य इकट्ठा होने पर जैन कुल मिला है। ज्यादा से ज्यादा धर्माराधना करके, आत्म कल्याण करके मनुष्य भव एवं जैन कुल को सार्थक करो।

– शेखरचंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

टोंक की ओर विहार कर रहे

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

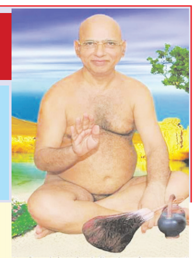

Jain Group

साधुओं में आचार्य शांति सागरजी के और तीर्थ में सम्मेद शिखरजी के दर्शन सभी श्रावक श्राविकाओं को करना चाहिए

-आचार्यश्री वर्धमान सागर जी

आचार्य संघ का चातुर्मास टोंक जिले में होगा

जहाजपुर। प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की परंपरा के पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज की आगवानी आचार्य श्री शांति सागर जी छाणी परंपरा की गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी ने संघ सहित जहाजपुर आगमन के पूर्व की। आपने आचार्य वंदना और आचार्य भक्ति परिक्रमा लगाकर की। पूज्य आर्यिका माताजी श्री स्वस्ति भूषण माताजी अन्य साधुओं प्रियंका दीदी एवं किशोर जैन इंदौर ने जहाजपुर मंदिर आगमन पर आचार्य श्री के 9 प्रकार के रत्नों केशर से चरण प्रक्षालन किए। आचार्य श्री वर्धमान सागरजी ने प्रवचन में दर्शन, अभिषेक, पूजन, आहारदान, सांसों का महत्व, वास्तविक दान, समवशरण की रचना, दर्शन का महत्व, पंचकल्याणक का महत्व, स्वयं के चिंतन, ब्यावर में आचार्य शांति सागर जी के चातुर्मास, साधु के साधु के प्रति विनम्रता और विनय भाव, चक्रवर्ती शब्द का महत्व, जहाज का वास्तविक अर्थ, संस्कृति और धर्म की रक्षा में आचार्य शांति सागर जी के योगदान, जीवन में श्वास का सदुपयोग आदि पर विस्तृत उपदेश दिया। राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने उपदेश आगे बताया कि तीर्थंकर चक्रवर्ती एक समय में एक होते हैं। चक्रवर्ती 6 खंड पर विजय प्राप्त करते हैं प्रथमाचार्य श्री शांति सागर जी महाराज ने चारित्र के 6 खण्डों पर विजय प्राप्त की थी इसीलिए उन्हें चक्रवर्ती की उपमा दी गई। उनके जीवनकाल में अन्य कोई मुनि आचार्य चक्रवर्ती नहीं हुए। श्री शांति सागर जी ने धर्म और संस्कृति की रक्षा की। साधु दूसरे साधु के प्रति विनम्रता और भक्ति प्रदर्शित करते हैं। साधुओं में आचार्य श्री शांति सागर जी और सिद्धक्षेत्रों में श्री सम्मेद शिखर जी के दर्शन सभी को अवश्य करना चाहिए। धर्मात्मा सर्व को प्रेरणा और उपदेश देते हैं। जीवन में कितनी सांसें बची हैं उसे सांसों को धर्म में लगाना चाहिए। तीर्थक्षेत्र संयम साधना के स्थल हैं, खानेपीने आमोद प्रमोद के स्थल श्रावकों ने बना दिया। इससे धर्म नहीं होता। आपके विचारों क्रियाओं से हमारे तीर्थक्षेत्र सुरक्षित नहीं हैं। जीवन में धर्म को अपना कर मनुष्य जीवन को सार्थक करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। यह मंगल देशना पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने स्वस्ति धाम जहाजपुर में आयोजित धर्म सभा में प्रगट की। आचार्य श्री ने आगे प्रवचन में बताया कि न्याय और नीति से अर्जित द्रव्य को दान देना चाहिए। दान धर्म कार्य में देना चाहिए। समवशरण मंदिर धर्म का प्रतीक है, जिनबिंब दर्शन से सम्यकज्ञान होता है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में सूर्य मंत्र से प्रतिमाओं में देवत्व के गुण आरोपित किए जाते हैं। जिनालय जिनबिंब के दर्शन श्रद्धापूर्वक करना चाहिए। सभी को 5 मिनट स्वयं के बारे में चिंतन करना चाहिए। भगवान की प्रतिमा संदेश देती है। आचार्य श्री ने बताया कि 40 वर्ष पूर्व हमने जहाजपुर गांव में भगवान श्री नेमिनाथ और श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के दर्शन किए थे। आचार्य श्री ने बताया कि ब्यावर राजस्थान में प्रथमाचार्य श्री शांति सागर जी और आचार्य श्री शांति सागर जी छाणी ने एक साथ चातुर्मास किया था। इसके पूर्व गणिनी आर्यिकाश्री स्वस्ती भूषण माताजी ने सम्यकदर्शन, ज्ञान, चारित्र की विवेचना की। देव शास्त्र गुरु वीतरागी और होते हैं। उनके प्रति दृढ़ श्रद्धा रखना चाहिए। तत्वार्थ सूत्र के छठे अध्याय में विवेचना है कि सच्ची श्रद्धा सम्यकदर्शन है। माताजी ने बताया कि सिद्धि और प्रसिद्धि में अंतर है, लौकिक ज्ञान से प्रसिद्धि मिलती है किंतु रत्नत्रय धर्म से सिद्धि प्राप्त होती है। माताजी ने आचार्य श्री की प्रशंसा कर बताया कि कल चतुर्दशी को आचार्य श्री सहित सात साधुओं के उपवास थे उसके बावजूद संघ ने प्रतिकूल मौसम में बिहार किया। 27 जून को 36 वां आचार्य पदारोहण जहाजपुर में मनाया गया जिसमें आचार्य श्री ने टोंक जिले में चातुर्मास करने की घोषणा की।

– राजेश पंचोलिया, इंदौर

जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाईजेशन के लखनऊ चैप्टर का हुआ गठन

पी के जैन अध्यक्ष, अभिषेक महासचिव बने, डिप्टी सीए ने पदाधिकारियों दिलाई को शपथ, जल्द बनेगा छात्रावास, 32 देशों में सक्रिय है संगठन

लखनऊ। जैन समाज की प्रतिष्ठित संस्था जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन (जीतो) के लखनऊ चैप्टर का गठन रविवार 22 जून को हुआ। कार्यक्रम में डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक, राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा और मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह ने नवगठित इकाई के पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। पी. के. जैन को अध्यक्ष और अभिषेक जैन को महासचिव नियुक्त किया गया। गोल्फसिटी स्थित होटल में आयोजित समारोह की शुरुआत एमएलसी डॉ. महेंद्र सिंह ने दीप प्रज्वलन कर की। मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा ने कहा कि सेवा भाव में जैन समाज अग्रणी रहा है। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने जीतो जॉब्स के माध्यम से रोजगार सृजन की सराहना की और हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय भंडारी और उपाध्यक्ष कमलेश सोजातिया ने बताया कि संगठन 32 देशों में कार्यरत है और लखनऊ देश का 77वां चैप्टर बना है। जीतो एपेक्स के डायरेक्टर व नॉर्थ जोन के चेयरमैन रमन जैन, लखनऊ चैप्टर के चेयरमैन पीके जैन ने आश्वासन दिया कि लखनऊ में जल्द ही एक छात्रावास का निर्माण किया जाएगा। कार्यक्रम में परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, एमएलसी मुकेश सिंह, पवन सिंह, पूर्व महापौर संयुक्ता भाटिया, सीएम के विशेष कार्याधिकारी श्रवण सिंह बघेल, अर्पित जैन, राजीव जैन, नितिन जैन, अंकित जैन, सौरभ जैन, राहुल जैन, ऋषभ जैन, समक्ष जैन मौजूद रहे। अन्य प्रमुख नियुक्तियां संजीव जैन और गुंजन जैन (उपाध्यक्ष), विमल जैन (कोषाध्यक्ष), गौरव जैन (संयुक्त मंत्री)। महिला प्रकोष्ठ में अमिता जैन अध्यक्ष और मनीषा जैन महासचिव बनीं। सलाहकार के रूप में कैलाश चंद्र कागजी, हंसराज जैन, अरविंद कुमार जैन और धीरज कुमार जैन को जिम्मेदारी सौंपी गई।

अंतर्मना जैन आचार्य द्वारा भयानक गर्मी में सामयिक

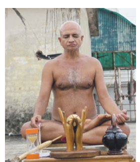

भीषण गर्मी, 2 उपवास में 11 किलोमीटर का पदविहार करने के पश्चात चिलचिलाती चिपचिपाती धूप, कड़क गर्मी में जाप, तप, सामयिक साधना करते हुए के दिव्य दर्शन प्रतिदिन के भांति श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कवि नगर, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश में परम पूज्य तपोशिरोमणि अंतर्मना गुरुदेव आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागर जी महाराज के। गत 24, जून 2025 मंगलवार में दोपहर की सामयिक करते हुए। साधना शिरोमणि गुरुदेव के चरणों में कोटि कोटि नमन।

अकोला से पहला बीसा नागदा समाज का बेटा सेना में मेजर

आयुष जैन तोरावत जैन बीसा नागदा समाज का यह नौजवान देश की सेना में तरक्की करते हुए मेजर बन गया तो समाज के पहले मेजर को शुभकामनाएं तो बनती हैं। आयुष प्रकाश जी न्यालचंद जी तोरावत (रामगढ़ वाले) (अकोला में होटल डिलाइट वाले) का बेटा है। सुरेंद्र तोरावत और सौ. अंजू तोरावत उनके बड़े मम्मी पापा हैं और सबसे खास बात कि यह युवक अकोला का है। बहुत बहुत शुभकामनाएं ओर बधाई।

एएसआइ ने माना रिजोर से निकली प्रतिमा जैन तीर्थंकर की

खोदाई में निकली थी प्रतिमा, बौद्ध श्रद्धालुओं ने किया था दावा, थाने में रखी प्रतिमा निधौली कलां पहुंची

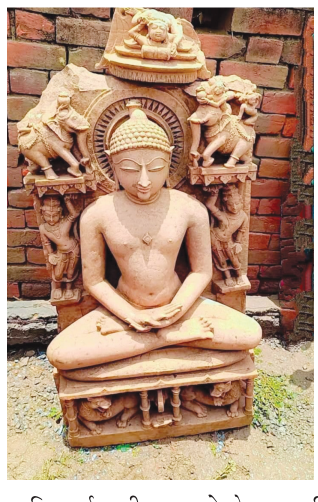

एटा। रिजोर में टीले की खोदाई के दौरान निकली प्रतिमा दिगंबर जैन तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ भगवान की ही है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) की टीम ने जांच के बाद इस पर मोहर लगा दी। इसके बाद प्रतिमा को थाने में रखवा दिया गया है। टीम निधौली कलां के जाटवपुरा भी पहुंची और उस स्थान का निरीक्षण किया, जहां से 15 दिन पूर्व प्राचीन कालीन सिक्के खोदाई में निकले थे। तीन दिन पूर्व प्राचीन टीले पर बनाए जा रहे आरआर सेंटर की खोदाई के दौरान जैन तीर्थंकर की प्रतिमा निकली थी। इसकी सूचना पर बौद्ध धर्म के अनुयायी भी पहुंचे थे और भगवान बुद्ध की प्रतिमा का दावा किया गया। वहीं जैन धर्म के अनुयायी प्रतिमा पर कछुआ का चिन्ह बताकर 20 वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा बता रहे थे। रविवार 22 जून दोपहर 12.30 बजे आगरा से एएसआइ की टीम पहुंची और जांच की। टीम ने बताया कि 20वें तीर्थंकर की यह मूर्ति है। एएसआइ के जाने के बाद पुलिस ने प्रतिमा को थाने में सुरक्षित रखवा दिया। जैन समाज के लोग डीएम प्रेम रंजन सिंह से मिलकर प्रतिमा सौंपे जाने की मांग कर चुके हैं। यह मूर्ति कब तक थाने में रहेगी यह अभी तक स्पष्ट नहीं है।

वात्सल्य वारिधि के 36 वें आचार्य पदारोहण पर विशेष

चारित्र चक्रवर्ती परंपरा के पंचम पट्टाचार्य आचार्यश्री वर्धमान सागरजी महाराज का अविस्मरणीय योगदान

संपादकीय

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में श्रमण संस्कृति का महनीय योगदान है। श्रमण संस्कृति के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस गौरवमयी श्रमण परंपरा में परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का अहम योगदान है।

हम सभी का परम सौभाग्य है कि परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की महान परंपरा के पट्टाचार्य का दर्शन लाभ प्राप्त हो रहा है। आपका संघ त्याग तपस्या के लिए पूरे भारत में विख्यात है। संघ में आपका अनुशासन देखने योग्य है। आपकी वाणी से हजारों-हजार प्राणियों का कल्याण हो रहा है। आपका सभी के प्रति वात्सल्य भाव अनूठा है। कोई भी आपके चरणों में पहुँच जाय, बस आपका होकर रह जाता है। आपकी सबसे बड़ी विशेषता है कि आप किसी की निंदा, आलोचना कभी नहीं करते, न ही किसी विवादास्पद चीजों में पड़ते हैं।

संयम, साधना और श्रद्धा की त्रिवेणी जब किसी संत के जीवन में सजीव रूप ले ले, तब वह व्यक्तित्व सामान्य नहीं रह जाता। वह बन जाता है - युगपुरुष, दिशानायक और लोकपथ-प्रदर्शक। दिगंबर जैन धर्म की चारित्र परंपरा में एक ऐसा ही तेजस्वी, करुणामय और प्रेरणास्पद व्यक्तित्व हैं - वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज, जो आज के युग में संयम और समर्पण के जीवंत प्रतीक हैं।

बचपन से वैरागी: परम पूज्य आचार्य श्री 108 वर्धमानसागर जी महाराज का गृहस्थ अवस्था का नाम यशवंत कुमार था। श्री यशवंत कुमार का जन्म मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के सनावद ग्राम में हुआ। श्रीमती मनोरमा देवी एवं पिता श्री कमलचंद्र जैन पंचोलिया के जीवन में इस पुत्र रत्न का आगमन दिनांक 18 सितम्बर सन 1950 को हुआ। आपने बी. ए. तक लौकिक शिक्षा ग्रहण की, सांसारिक कार्यों में आपका मन नहीं लगता था। प्रारंभ से ही उनमें वैराग्य की चिंगारी, ज्ञान की ललक और करुणा की संवेदना दिखने लगी थी। सांसारिक सुखों को असार जानकर उन्होंने ब्रह्मचर्य की ओर कदम बढ़ाया। युवावस्था में ही दीक्षा लेकर वे मुनि व्रतों में प्रवृत्त हुए और कठोर तप में रत हो गए।

''ना प्यास रही ना धूप रही,
जब तप में तन्मयता रूप रही।''

उनकी आरंभिक साधना में ही गुरुजनों ने उनके भीतर तपस्विता, संयम शक्ति और आगम-निष्ठा के बीज देख लिए थे। 18 वर्ष की अवस्था में आचार्य श्री धर्म सागर जी महाराज से आपने मुनि दीक्षा ग्रहण की, श्री शांतिवीर नगर, श्री महावीर जी में मुनि दीक्षा लेकर आपको मुनि श्री वर्धमानसागर नाम मिला। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज की परम्परा के पंचम पट्टाधीश होने का आपको गौरव प्राप्त है।

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी अत्यंत सरल स्वभावी होकर महान क्षमा मूर्ति शिखर पुरुष हैं, वर्तमान वातावरण में चल रही सभी विसंगताओं एवं विपरीतताओं से बहुत दूर हैं, उनकी निर्दोष आहार चर्या से लेकर सभी धार्मिक क्रियाओं में हम आज भी चतुर्थ काल के मुनियों के दर्शन का दिग्दर्शन कर सकते हैं।

नमस्कार से चमत्कार: चमत्कार को नमस्कार नहीं, बल्कि नमस्कार में छुपा हुआ होता है अगर भक्ति निष्काम हो तो। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज जब मुनि अवस्था में थे तब दीक्षा के उपरांत महाराज की नेत्र ज्योति चले गई थी, तब उन्होंने जयपुर (खानिया जी) के चन्द्रप्रभु मंदिर में शांति भक्ति का पाठ किया था तब 52 घंटों के बाद नेत्र ज्योति वापस आई थी।

वात्सल्य वारिधि: उनकी वाणी में करुणा है, दृष्टि में करुणा है, व्यवहार में ममत्व है और प्रवचन में आत्मीयता। इसलिए उन्हें समग्र जैन समाज ने इस उपाधि से सुशोभित किया।

शास्त्रज्ञान और तत्त्वचिंतन की गहराई: आचार्य श्री वर्धमान सागर जी - समयसार, गोम्मटसार, मूलाचार, प्रवचनसार, तत्त्वार्थसूत्र, अष्टपाहुड़ जैसे आगम ग्रंथों के ज्ञाता हैं। वे ज्ञान और भावना का समन्वय करते हैं। उनके प्रवचन न तो केवल भाषण होते हैं और न ही केवल पाठ बल्कि आत्मा को झकझोरने वाले संवाद होते हैं।

''जो जीवन में जैनागम को उतारे,
वही गुरु है जो आत्मा को संवारे।''

चारित्र चक्रवर्ती प्रथमचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण पट्ट परम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य श्री 108 अजितसागर जी महाराज पत्र के माध्यम से लिखित आदेश अनुसार पारसोला राजस्थान में 24 जून 1990 आषाढ़ सुदी दूज को आचार्य पद गुरु आदेश अनुसार दिया गया।

दीक्षाएं: शिष्य निर्माण - आत्मा से आत्मा का संवाद - आचार्यश्री के शिष्य मंडल में मुनि, आर्यिका, एलक, क्षुल्लक -क्षुल्लिका और संयमियों की लंबी परंपरा है। वे शिष्यों के चयन में कठोर होते हैं, पर प्रशिक्षण में अत्यंत प्रेममयी। उनके लिए संयम एक संस्कार की प्रक्रिया है, न कि केवल व्रतों की खानापूर्ति।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी गुरुदेव ने अभी तक 116 दीक्षाएं देकर श्रमण संस्कृति को महनीय अवदान दिया है।

मुनि दीक्षा-41, आर्यिका-45, एलक-02, क्षुल्लक-15, क्षुल्लिका-13।

सल्लेखना समाधि: वात्सल्य वारिधि यथा नाम तथा गुण यह पंक्ति आप पर चरितार्थ होती है। आप साधुओं की सल्लेखना इतने वात्सल्य भाव मनोयोग करुणा भाव से कराते हैं कि हर श्रावक-श्राविका साधु की यही कामना होती है कि उनका उत्कृष्ट समाधिमरण आपके सान्निध्य में हो।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा: आचार्य पद के बाद 60 से अधिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आपके सान्निध्य में हुई हैं।

प्रभावनामयी चातुर्मास: आचार्यश्री ने 12 राज्यों राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु, झारखंड, बिहार, बंगाल व मध्यप्रदेश में ये मंगल प्रभावनामयी चातुर्मास किये हैं।

विहार शैली: लोकजागरण का माध्यमः वे आज भी अपने संघ के साथ वर्षभर पदविहार करते हैं। तपती धूप, वर्षा और ठंडी हवाओं के बीच उनके चरणों से निकले हजारों किलोमीटरों के विहार आज के लिए संयम की जीवंत कक्षा हैं।

वर्तमान युग में प्रासंगिकता: जब आज का समाज भौतिकता में डूब रहा है, नैतिकता से भटक रहा है और युवापीढ़ी दिशाहीन हो रही है, तब आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी जैसे संत मार्गदर्शक बनकर कहते हैं: ''जो भोगों के पीछे भागता है, वह आत्मा को खो देता है। जो आत्मा को साधता है, उसे सब प्राप्त हो जाता है।''

गोमटश्वेर महामस्तकाभिषेक में तीन बार सानिध्य: उल्लेखनीय है कि श्रवणबेलगोला कर्नाटक में बाहुबली भगवान के सुप्रसिद्ध महामस्तकाभिषेक में वर्ष 1993, 2006 एवं वर्ष 2018 में प्रमुख नेतृत्व दिया गया। श्री श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक में भारत के राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी, राज्यपाल सहित अनेक वरिष्ठ राजनेताओं ने आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन को धन्य बनाया।

आचार्यश्री से जुड़े विशेष उल्लेखनीय तथ्य:

1. पानी की व्यवस्था गुजरात में आहार के लिए पानी कुंए का पानी लबालब हुआ।
2. श्रवणबेलगोला में 1993 में मूसला धार वर्षा से पानी की समस्या दूर।
3. कोथली में प्रवेश के पूर्व नदी- नाले, कूप पानी से लबालब।
4. कमंडल के पानी से श्रावक बालक को नया जीवन मिला।
5. 13 का अशुभ अंक बना शुभ - आपके जन्म के पूर्व 8 भाई और चार बहनों ने जन्म लिया जो काल के ग्रास बने। 13 वीं संतान का अंक आपके जन्म से शुभ बना और आप जगत के तारणहार हो गए।
मानव से महामानव हो गए। आपके बाद चौदहवीं संतान भी बाद में जीवित नहीं रही। आप माता-पिता की एकमात्र जीवित संतान हैं।
6. पैर में चक्रः कनकगिरी में आपके पैर में कष्ट होने पर भट्टारक स्वामी जी ने देखा कि आपके पैर में चक्र है जो कि इस बात का सूचक है कि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार और बहुत प्रभावना होगी।
7. अद्‌भुत संयोगः बारह संतानों के निधन के कारण माता-पिता ने श्री महावीरजी में उल्टा स्वस्तिक बनाकर उनके लंबे जीवन की कामना की थी, यह संकल्प किया था कि इनके जन्म के बाद इनके बाल उतारेंगे इनके बाल निकालेंगे। संयोग कहें कि इनकी मुनि दीक्षा वहीं श्री महावीरजी में हुई और उनके केशलोंच हुए।
8. पद के प्रति उदासीनता, उपाध्याय पद लेने से इनकार।
9. आचार्यश्री का प्रमुख संदेश समाज में कैंची नहीं सुई बनकर रहो। जहाँ जो परंपरा चल रही है उससे छेड़छाड़ न करें।
10. अपूर्व वात्सल्यः इचलकरंजी सहित अनेक नगरों की समाज को एक किया। बीमार श्रावक को दर्शन देने स्वयं चलकर गए। टोडारायसिंह में दिगंबर श्वेतांबर समाज को एक किया।
11. कोई प्रोजेक्ट नहीं, पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमानसागर जी के नाम पर कोई क्षेत्र या गिरी नहीं है। श्रावक के दान का सदुपयोग हो यही उनकी मंगल प्रेरणा रहती है।
12. पूर्वाभासः पूर्वाभास के कारण एक स्थान पर रात्रि विश्राम नहीं किया। मैरिज गार्डन के कारण कुछ श्रावकों ने वहां विश्राम किया। उस गांव के बारूद फैक्ट्री में अचानक आग लगती है और सभी श्रावक रात्रि में आचार्यश्री के पास पहुंचते हैं। तब पता लगता है कि रात्रि को गांव में आग लग गई थी और जान माल का खतरा हो गया था।

वर्तमान के वर्धमान: आचार्य श्री वर्धमान सागर वर्तमान के वर्धमान के समान साधना और प्रभावना कर रहे हैं। उनके जीवन की बहुत विशेषताएं हैं। वे परिस्थितियों के सामने झुके नहीं, उपसर्गों व परीषहों से वे डरे नहीं और रुके नहीं, निरंतर गतिमान उनका जीवन रहा है और आदर्शमय चारित्र के द्वारा जहां एक ओर धर्म की प्रभावना की उसके साथ ही उन्होंने आदर्श जीवन को रखकर हम सबका मार्गदर्शन कर रहे हैं। उनका मार्ग आगम सम्मत ही होता है। हमारी संस्कृति की सुरक्षा में उनका अविस्मरणीय अवदान है।

विचार और आचार की क्रिया विधि रूप जीवन शैली में अद्‌भुत सहजता है आचार्यश्री वर्धमान सागर जी में, इसीलिए वे वात्सल्य वारिधि हैं एवं विचार और आचार परिशुद्धि में निरंतर वर्धमान।

आचार्यश्री का समन्वय का सूत्र: आचार्यश्री का कहना है कि मैं अपनी क्रिया छोड़ूंगा नहीं और आपको अपनी क्रिया करने के लिए बाध्य भी नहीं करूंगा। यह समन्वय का सूत्र उन्होंने दिया है। आज समाज में जो अनेक विसंगतियां देखने को मिल रहीं हैं यदि आचार्यश्री के इस समन्वय सूत्र को अपना लें तो विसंगतियों पर विराम लग सकता है। आचार्य श्री वर्धमानसागर जी श्रमण परम्परा व धर्म और संस्कृति की ध्वजा निरंतर लहरा रहे हैं।

मेरा सौभाग्य रहा है कि पूज्य आचार्यश्री का मंगल आशीर्वाद मुझे अनेकों अवसरों पर मिला है तथा उनके सान्निध्य में आयोजित विद्वत संगोष्ठियों का संयोजन करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा पुरस्कार समर्पण समारोह में भी संयोजन करने का सुअवसर मिला है। परम पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से यह वर्ष चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज आचार्य पद पदारोहण शताब्दी वर्ष के रूप में पूरे देश में मनाया जा रहा है। इसके पूर्व सन् 2019 में मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष भी आपकी प्रेरणा से राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया था, जिसका भव्य समापन आचार्य श्री शांतिसागर जी की मुनि दीक्षा स्थली यरनाल, कर्नाटक में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के ही सान्निध्य में हुआ था। आचार्य वर्धमानसागर जी महाराज मात्र एक मुनि, आचार्य या प्रवचनकर्ता नहीं - वे हैं - दिगंबर चारित्र परंपरा के प्रतीक, संयम के आदर्श उदाहरण, आगम परंपरा के संरक्षक और वात्सल्य से ओतप्रोत मानवता के उपदेशक हैं। उनका जीवन धर्म की अखंड ज्वाला है, जिसमें हर आत्मा यदि थोड़ा-सा ताप ले, तो जीवन दिशा बदल सकती है। परम पूज्य आचार्य प्रवर के 36वें आचार्य पदारोहण दिवस पर उनके पावन चरणों में **कोटिशः** नमोस्तु।

ये जन -जन के आराध्य गुरु, ये भक्तों के भगवान, आचार्य श्रेष्ठ हे वर्धमान, तुम श्रमणों के अभिमान।

-डॉ. सुनील जैन 'संचय' ललितपुर,
प्रधान सम्पादक

जो 24 घंटे हमारी परिणामों में समता आती है वह अनियतकाल सामायिक कहलाती है और कुछ समय के लिए संकल्प पूर्वक ध्यान में बैठते हैं, वो नियत काल सामायिक है।
-मुनिपुंगव सुधा सागरजी

धर्म या तमाशा? जैन समाज के मंदिरों में आचरण बनाम प्रदर्शन की जंग

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

जब मंदिर में भगवान से पहले किसी मुख्य अतिथि को माला पहनाई जाती है, जब तपस्वी साधुजन पीछे और करोड़पति दानदाता आगे बैठते हैं और जब संयम की गूंज के स्थान पर माइक, कैमरा और प्रचार की गड़गड़ाहट सुनाई देती है, तब यह प्रश्न उठना लाजिमी है: यह धर्म है या तमाशा? और समझ लेना चाहिए कि धर्म संकट में है।

1. धर्म का मूल - आचरण, न कि आडंबर: भगवान महावीर ने कभी किसी सोने की आसन पर प्रवचन नहीं दिए, न ही किसी महल में जीवन बिताया। वे जंगलों में घूमे, पत्थरों पर सोए, भूखे रहे, मगर सत्य, अहिंसा, संयम और त्याग के मार्ग से नहीं डिगे। उनका धर्म प्रदर्शन नहीं, साधना था। भगवान महावीर ने जीवन भर संयम, तपस्या और त्याग का मार्ग अपनाया। वे राजमहलों को छोड़ वनवासी बने, भूखे रहे, कांटों पर चले, लेकिन कभी प्रदर्शन नहीं किया। उनका धर्म साधना था, दिखावा नहीं मगर आज के जैन मंदिरों में धर्म का मूल तत्व ''आचरण'' गौण हो गया है और ''आंडबर'' प्रधान।

आज के मंदिरों में:

- संयम गौण हो गया है, प्रदर्शन प्रधान हो गया है।
- जो धर्म को जीते हैं, वे कोने में बैठते हैं;
- जो धन लुटाते हैं, वे मंच पर बैठते हैं।

मगर विडंबना देखिए कि आज:

- जो करोड़ों का दान करता है, वो धर्म सभा का संचालक बनता है।
- जो संयम और तपस्या में रत है, वो भीड़ में बैठा रहता है।
- और जो सच्चा श्रद्धालु है, वह प्रश्न पूछने से भी डरता है।

''धर्म का सार आडंबर में नहीं, आत्म संयम में है।''
''उपदेश से पहले आचरण जरूरी है'' आत्मा का कल्याण आडंबर से नहीं, आत्म संयम से होता है।''
- भगवान महावीर

2. मंदिर - साधना स्थल या स्टेज शो?: पहले मंदिरों में घंटियों की गूंज और शांति मिलती थी, अब माइक, लाइट और सजावट का शोर सुनाई देता है।

- कलश चढ़ाने की होड़ लगी है - किसने सबसे महंगा चढ़ाया?
- छत्र किसका सबसे भारी? किसने सबसे बड़ा आचार्य बुलाया?
- पूजा कम, प्रचार ज्यादा। साधना कम, सजावट ज्यादा।
- पूजा कम होती है, प्रचार अधिक।
- भक्ति कम, ब्रांडिंग अधिक।
- आराधना कम, आयोजनों का शोर अधिक।

यह सब देखने के बाद सवाल उठता है: यह धर्म है या बाजार?

''जहाँ साधना मौन हो जाए और मंच बोलने लगे, वहाँ धर्म सिसकता है।''

3. धर्म का व्यापार मॉडल:
आज धर्म ''बिजनेस मॉडल'' बन चुका है:
1. तप का स्थान टेंट ने ले लिया है -

- पहले उपवास कर पुण्य कमाते थे अब 'फाइव स्टार' भंडारे लगाकर प्रसिद्धि पाते हैं।

2. गुप्त दान की जगह लाइव डोनेशन-

- सोशल मीडिया पर दान की वीडियो, फोटो के साथ 'सम्मान पत्र' का वितरण।

3. सेवा की जगह सेल्फी -

- पहले भगवान के चरणों में झुकते थे, अब मंच पर टप्चू चेयर पर बैठकर पोज देते हैं।

''सेवा से स्वर्ग मिलता है, लेकिन आज हम सेवा के नाम पर सेल्फी कमा रहे हैं।''

4. दान - पुण्य या प्रदर्शन?
भगवान ने गुप्तदान को श्रेष्ठ कहा। लेकिन अब:

- लाइव डोनेशन होता है, फोटो खिंचती है, वीडियो बनते हैं, सम्मान पत्र मंच से बांटे जाते हैं।

''जहाँ दान दिखावे का माध्यम बन जाए, वहाँ पुण्य की पवित्रता नष्ट हो जाती है।''

5. सेवा - समर्पण या सेल्फी?
एक समय था जब श्रद्धालु चुपचाप भगवान की सेवा करते थे। अब:
मंच पर VIP चेयर, कैमरे की ओर पोज, और सोशल मीडिया पोस्ट - यही सेवा का प्रतीक बन गया है। ''सेवा के बदले सेल्फी मिल रही है, और समर्पण के बदले सम्मान।''

6. तीर्थ - श्रद्धा का केंद्र या कमीशन की मंडी?
सच्चाई कड़वी है, लेकिन जरूरी है:

- आज तीर्थस्थल टेंडर सिस्टम पर चल रहे हैं।
- डेकोरेटर, कैटरर, भजन मंडली - सब कमीशन बेसिस पर तय होते हैं।
- मंदिर ट्रस्ट एक ''क्लोज ग्रुप'' में बदल चुके हैं, जहाँ पारदर्शिता न के बराबर है।
- पुजारी, पंडित, भजन मंडली सब सेट रेट पर।

''जब धर्म के नाम पर धंधा होने लगे, तो समझो आस्था घायल हो चुकी है। जब तीर्थों में दलाल बैठ जाएं, तो तीर्थ यात्रा व्यापार यात्रा बन जाती है।''

7. संघों की भूमिका - दिशा या दबाव?
संघ और समाज की भूमिका

- धर्म रक्षा सिर्फघोषणा करने से नहीं होती, उसके लिए साहस चाहिए - सच बोलने का, और गलत का विरोध करने का।
- संघों को तय करना होगा: क्या पैसे के आगे झुकेंगे या आचरण को प्राथमिकता देंगे?
- अगर मुनि भी दानदाताओं की कृपा पर टिके रहेंगे, तो संयम कैसे बचेगा?
- संयम का सम्मान अनिवार्य

''जिस समाज में संयम को प्राथमिकता नहीं, वह समाज धर्म से भटक जाता है।''
जिन संघों को धर्म प्रचार करना चाहिए था, वे अब:

- धनियों के चरणों में झुक रहे हैं,
- संयमी मुनियों की उपेक्षा कर रहे हैं,
- भव्यता की होड़ में लग गए हैं।

''संघ की गरिमा तपस्वियों से बनती है, टेंट हाउस से नहीं।''

8. आने वाली पीढ़ी का दृष्टिकोण:
जब युवा देखता है कि धर्म:

- मंच, पैसा और प्रचार का खेल है, संयम और सादगी कहीं नहीं दिखती, तो वह धर्म से दूर हो जाता है। आने वाली पीढ़ी को क्या देंगे? अगर यही चलता रहा, तो आने वाली पीढ़ी धर्म से जुड़ने के बजाय दूर हो जाएगी।
- वे कहेंगे: ''यह तो केवल पैसे वालों का खेल है।''
- वे पूछेंगे: ''संयम और साधना कहाँ है?''

''जो धर्म सच्चाई, तपस्या और संयम से दूर हो जाए, वो केवल नाम का धर्म रह जाता है। धर्म को जिंदा रखना है तो उसे जीना पड़ेगा, दिखाना नहीं।''

9. समाधान: कैसे लौटे धर्म अपनी जड़ों की ओर?
1. संयमवान को पहला स्थान: जो संयम में हो, भले ही निर्धन हो, उसे प्रथम आसन मिले।
2. दान को गोपनीय बनाएं: पुण्य का प्रचार नहीं होना चाहिए।
3. मंदिरों में पारदर्शिता: हर चढ़ावे का सार्वजनिक विवरण हो।
4. ट्रस्ट में लोकतंत्र: खुला चुनाव, जवाबदेही और रिपोर्टिंग हो।
5. संघों को तपस्वियों से जोड़ें: आडंबर से दूर, साधकों से जुड़ाव हो।

''धर्म को बचाना है तो उसे साधना के हाथों सौंपिए, सौदागरों के नहीं।''

यदि सच में धर्म को बचाना है, तो कुछ कठोर निर्णय लेने ही होंगे:
1. संयमवान को पहला आसन मिले - चाहे वो निर्धन ही क्यों न हो।
2. दान को गोपनीय और विनम्र बनाया जाए, न कि ढिंढोरा पीटने का माध्यम।
3. मंदिरों में पारदर्शिता अनिवार्य हो - हर चढ़ावे का हिसाब सार्वजनिक किया जाए।
4. संघों को अहंकारियों से दूर रखा जाए, साधकों से जोड़ा जाए।

10. क्रांति की आवश्यकता:
अब चुप रहने का समय नहीं। यह समय है:

- धर्म के नाम पर तमाशे को रोकने का।
- मंच से संयम की आवाज को बुलंद करने का।
- मंदिरों को सजावट नहीं, साधना से भरने का।

अब वक्त आ गया है:

- जब धर्म की गद्दी संयमी को मिले, पैसे वाले को नहीं।
- जब दान के बजाय दर्शन को महत्व दिया जाए।
- जब मुनियों को भक्ति से सुना जाए, न कि पैसों की अपेक्षा से।

''क्रांति वही सच्ची है, जो धर्म को उसकी आत्मा लौटाए।''

11. आत्ममंथन: धर्म क्या है?
धर्म:

- न तो मेगा शो है,
- न ही लाइमलाइट,
- न ही डेकोरेशन।

धर्म है:

- आत्मा का आत्मा से संवाद।
- त्याग, तपस्या और सत्य का समर्पण।
- मुनियों की मौन वाणी में गूंजता सत्य।

''धर्म वहां होता है, जहाँ भीड़ नहीं, साधना होती है।''

12. अंत में एक चेतावनी:
अंतिम शब्द: अगर अब भी न चेते, तो आने वाले वर्षों में मंदिरों की दीवारें चिल्ला-चिल्ला कर कहेंगी:
''यहाँ धर्म नहीं, धन पूज्य है!'' और हमारी पीढ़ियाँ सिर झुकाकर स्वीकार करेंगी।
''हमारे पूर्वजों ने धर्म को बेच डाला।''

13. आह्वान:
अब समय आ गया है:

- धर्म को मंच से उतारकर आत्मा में बसाने का, आचरण को प्रमुख बनाने का, और उन सबको आइना दिखाने का जो धर्म के नाम पर व्यापार चला रहे हैं।

''धर्म को बचाइए, संयम को सम्मान दीजिए और सत्य के लिए खड़े हो जाइए।''
''धर्म नहीं बिकने दें, ये हमारी पीढ़ियों का ऋण है।''

वर्षायोग हेतु युगल जैन संतों का हुआ मुरैना आगमन

मुरैना (मनोज जैन नायक)। चातुर्मास हेतु पूज्य जैन संत युगल मुनिराजों का भव्य नगरागमन हुआ। परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज से दीक्षित आचार्यश्री आर्जव सागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिराज श्री विलोकसागर एवं मुनिश्री विबोध सागर महाराज का 2025 का भव्य मंगल चातुर्मास श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में होना सुनिश्चित हुआ है। पूज्य मुनिराज अतिशय क्षेत्र टिकटोली की वंदना के पश्चात् जौरा में धर्म प्रभावना कर पद विहार करते हुए ज्ञानतीर्थ पधारे।

जैन समाज मुरैना, मंदिर कमेटी एवं वर्षायोग समिति ने बैरियर चौराहे पर पहुंचकर मुनिसंघ की अगवानी की। बैरियर चौराहे से मुनिसंघ को गाजे बाजे के साथ भव्य शोभायात्रा के रूप में मंगल प्रवेश कराया गया। शोभायात्रा में पुरुष वर्ग श्वेत वस्त्र एवं महिलाएं केसरिया परिधान में सुसज्जित थीं। युवा बंधु अपने हाथों में पचरंगी ध्वजाओं को लहराते हुए चल रहे थे। महिलाएं मंगल गान कर रही थीं। विभिन्न स्थानों पर युगल मुनिराजों का पाद प्रक्षालन एवं आरती कर अगवानी की गई। भव्य शोभायात्रा एम एस रोड, पुल तिराहा, सदर बाजार, हनुमान चौराहा, सर्राफा बाजार, लोहिया बाजार होती हुई बड़ा जैन मंदिर पर पहुंची। बड़े जैन मंदिर पर रंगोली आदि सजाकर, सिर पर मंगल कलश रखकर महिलाओं से पूज्य मुनिराजों की अगवानी की। उपस्थित सभी पुरुषवर्ग ने युगल मुनिराजों का पाद प्रक्षालन किया।

मेरा सौभाग्य कि इस पावन भूमि पर वर्षायोग होगा - बड़े जैन मंदिर में पूज्य मुनिश्री विलोक सागर महाराज ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मुरैना की भूमि पावन व पवित्र है। इस भूमि पर आचार्यश्री सुमति सागर एवं सराकोद्धारक आचार्यश्री ज्ञान सागर महाराज का जन्म हुआ। मुरैना नगर में गुरुनाम गुरु गोपालदास वरैया द्वारा स्थापित जैन संस्कृत विद्यालय है, इस विद्यालय ने सैकड़ों विद्वान तैयार किए, जो सम्पूर्ण भारत में जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। यदि मुरैना में वर्षायोग होता है तो यह मेरे लिए अति सौभाग्य की बात होगी।

वर्षायोग मन की मलिनता को साफ करता है - वर्षायोग केवल श्रीफल भेंट करने का नाम नहीं है। वर्षायोग केवल कमेटी या समाज या कोई व्यक्ति विशेष नहीं कराता। वर्षायोग तो वो पावन पर्व है जिसे सभी बंधु, समाज, कमेटियां एकजुटता के साथ मिलकर कराती हैं। वर्षायोग मन की मलिनता को साफ करने का समय होता है। अगर आपके मन की मलिनता दूर नहीं हुई, आपके मन का मैल साफ नहीं हुआ तो चातुर्मास कराना सार्थक नहीं होगा। चातुर्मास की सार्थक बनाने के लिए संपूर्ण समाज को एक छत के नीचे आना होगा, तभी चातुर्मास सफल होगा। हम केवल प्रवचन देते हैं, वचन नहीं देते। यदि हमें लगेगा कि समाज भक्तिभाव पूर्वक, एकजुटता के साथ चातुर्मास कराने के भाव रखती है तो मुरैना में चातुर्मास होगा, अन्यथा...।

20 जुलाई को होगा मंगल कलश स्थापना समारोह - यदि सब कुछ मंगल मंगल रहा तो 20 जुलाई को एक भव्य समारोह का आयोजन किया जाएगा। पूज्य युगल मुनिराजों द्वारा वैसे तो 09 जुलाई को ही वर्षायोग की स्थापना हो जाएगी। मुनिराज विलोक सागर एवं मुनिश्री विबोधसागर महाराज विधिविधान एवं मंत्रोच्चारण के साथ 09 जुलाई को चातुर्मास की स्थापना कर लेंगे। इनके साथ ब्रह्मचारी संजय भैयाजी (बम्होरी) एवं ब्रह्मचारी अजय भैयाजी (झापन) भी चातुर्मास करेंगे। जैन समाज मुरैना द्वारा 20 जुलाई को एक भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

मुंगेर की 96 वर्ष की दादी: सोहनी देवी जैन

स्वाती जैन, हैदराबाद

दादी मां से कहानियां तो हम सब लोग खूब सुनते हैं लेकिन आज इस कहानी का हिस्सा होंगी खुद एक ऐसी दादी मां जो 96 वर्ष की आयु में भी अपनी सक्रियता और अनवरत काम करने के चलते अपने सभी हम उम्र और युवा लोगों के लिये एक जीवंत प्रेरणा हैं। बिहार के मुंगेर जिले में अगर आप किसी दुकान के आगे दादी मां के बनाये मोजे लगा बोर्ड देखें तो अंदर जाइए, वहां आपको अलग-अलग नाप के सुंदर डिजाइन में वूलन मोजे, कैप, स्वेटर मिलेंगे जिन्हें आज भी 96 वर्ष की आयु में सोहनी देवी जैन जी बनाती हैं। वह उम्र जिसमें अक्सर लोगों के हाथ, पैर जवाब दे देते हैं और आंखों से दिखना और कानों से सुनना बंद हो जाता है, उस उम्र में सोहनी देवी हर दिन अपने हाथों से दो जोड़े क्रोशिए के मोजे और बाकी ऊनी कपड़े तैयार करती हैं और ग्राहक इनके बनाये उत्पादों को हाथों हाथ लेते हैं।

देश के बहुत से साधू संत व नामचीन हस्तियां आचार्य महाश्रमण, जीतो के संस्थापक गुरु नयपद्मसागर, आचार्य चंदना मां, बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत, पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे, योग गुरु स्वामी निरंजन नंद जी भी इन मां के बनाये मोजे पहन चुके हैं और इनकी इस कला व क्राफ्ट के मुरीद हैं।

सोहनी देवी जी की ना तो कोई आर्थिक जरूरत है और ना ही कोई दूसरी मजबूरी, बस जुनून है तो इस कला को बचाने का और अंतिम सांस तक अपने शौक को जिंदा रखने का क्योंकि यह इन्हें खुशी देता है और जीवन को खूबसूरती के साथ अपने तरीके से जीने की चाहत देता है। सोहनी देवी जी चाहती तो इस उम्र में सिर्फ और सिर्फ आराम की जिंदगी जी सकती थी, आखिर इनके छह बेटे हैं और ये छहों बेटे अपने अपने प्रोफेशन में देश में एक बड़ी पहचान रखते हैं। इनके सबसे बड़े बेटे विजय जैन जो कि फेमस फोटोग्राफर हैं, आज से चालीस साल पहले वर्ल्ड जापान कैनन गोल्ड अवार्ड विनर बन चुके हैं वहीं एक बेटे पद्मश्री बिमल जैन बिहार में समाज सेवा और राजनीति के क्षेत्र में एक बड़ा नाम हैं। एक बेटा जैन कमल देश के कला जगत में ख्याति प्राप्त हैं, तो एक बेटा निर्मल जैन विविध भारती रेडियो भागलपुर पर क्लासिक कार्यक्रम करते हैं। वहीं दो और बेटे संतोष जैन व दीपक जैन व्यवसायी हैं लेकिन अपने बेटों की इन सब उपलब्धियों से बेखबर होकर वह तो बस अपने धार्मिक कार्यों और अपने हुनर को सही दिशा देने में तल्लीन रहती हैं। इनके बेटे मशहूर कला संपादक, अक्षर सम्राट जैन कमल जी बताते हैं कि क्रोशिए के अलावा सोहनी देवी जी कढ़ाई की चादर और साड़ियां भी कुछ समय पहले तक तैयार करती थीं लेकिन यह कार्य बारीकी से होने और आंखों पर जोर पड़ने के कारण अभी वह सिर्फक्रोशिया ही चलाती हैं। क्रोशिए से ऊन पर अपनी कल्पना से सुंदर डिजाइन देना इनकी कला को और निखार देता है। इन्होंने भगवान राम द्वारा गिलहरी पर हाथ के स्पर्श को मोजों में उतारा है व कुछ दूसरी पौराणिक कथाएं भी इनके बनाये ऊनी वस्त्रों में स्थान पाती हैं। आज भी सोहनी देवी अपनी कल्पना से ऊन के कपड़ों में नये - नये रंग भर रही हैं और व्यस्त रहकर समय के हर एक पल का सार्थक उपयोग कर रही हैं। ये हर साल अपने पति 98 वर्षीय भंवरलाल जी (आरएसएस के पुराने कार्यकर्ता) के जन्म दिन पर मुंगेर के गोयनका मैटरनिटी हॉस्पिटल के अनाथालय में जाकर 71 शिशुओं को अपने हाथ से बनाये स्वेटर दान करती हैं। सोहनी देवी जैन आज भले ही अपने ख्यातनाम बच्चों की मां के रूप में पहचानी जायें लेकिन इनके बच्चों की सफलता के पीछे भी कहीं न कहीं इनकी इस मेहनत, जुनून और जज्बे की परछाई ही है।

सिरि भूवलय शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र के दशम सत्र का शुभारम्भ एवं प्राकृत प्रशिक्षणार्थियों का सम्मान समारोह

जैन समाज का व्यक्ति कोई भी कार्य प्रारंभ करता है उसका सफल होना निश्चित है - प्रो. नीतेश पुरोहित

डॉ. अरविन्द कुमार जैन, इंदौर

इंदौर। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ एवं भारतीय ज्ञान परंपरा उत्कृष्टता केंद्र SGSITS के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित सिरि भूवलय शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र के दशम सत्र का शुभारम्भ एवं प्राकृत विद्या अध्ययन केन्द्र से प्रशिक्षित प्रशिक्षणार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें SGSITS के निदेशक प्रो. नीतेश पुरोहित मुख्य अतिथि एवं राष्ट्रीय फेडरेशन के अध्यक्ष श्री मनोहरलाल जी झांझरी अतिथि रुप में उपस्थित रहे।

नौवीं शती में जैन आचार्य श्री कुमुदेन्दु रचित ग्रंथराज सिरि भूवलय को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने आठवाँ आश्चर्य निरुपित किया था। अंक लिपि में रचित सर्वभाषामयी सनातन परम्परा के ज्ञान विज्ञान को इसमें चक्रों के माध्यम से उद्घाटित किया जा सकता है। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य कुमुदेन्दु की स्तुतिमय मंगलाचरण से श्रीमती डॉ. उमंग जैन द्वारा किया गया, तत्पश्चात् भगवान महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया।

संस्थाध्यक्ष अमित कासलीवाल जी ने शताधिक वर्ष की सफलतम यात्रा और संस्था द्वारा चलाए जा रही बहुआयामी गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में भारत ही नहीं विश्व के अद्भुत, अद्वितीय, चमत्कारी ग्रंथ सिरिभूवलय के बारे में जानकारी इंजी. अनिल कुमार जैन व ब्रह्मचारी दीदी समता मामोरा ने दी। कार्यक्रम में भूवलय शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र के दशम सत्र के शुभारम्भ की घोषणा की गई।

सभी भाषाओं की जननी प्राकृत भाषा के महत्व, शोध और अध्ययन की आवश्यकता की जानकारी प्रो. संगीता मेहता विभागाध्यक्ष संस्कृत, प्रभारी-भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ ने दी। इस अवसर पर प्राकृत विद्या अध्ययन केन्द्र में स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त तथा अन्य प्रशिक्षित प्रशिक्षणार्थियों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. नीतेश पुरोहित ने कहा कि जैन समाज का कोई भी व्यक्ति कोई काम शुरू करता है तो उसकी सफलता की ग्यारंटी होती है, निस्संदेह निस्वार्थ भाव से किया जा रहे आपके ये कार्य पूर्ण रूप से वांछित सफलता प्राप्त करेंगे। इस अद्भुत कार्य में हम सहयोग करेंगे तो यह हमारा सौभाग्य ही होगा। पांचवीं पीढ़ी के रूप में अमित कासलीवाल जी का परिवार पूर्ण मनोयोग से धर्म प्रभावना व संस्कृति संरक्षण के कार्य में लगा है यह निश्चित रूप से प्रशंसनीय है।

कार्यक्रम में प्रो. रेणु जैन पूर्व कुलपति, प्रो. ऋषभ फौजदार दमोह, रश्मि जैन जबलपुर, डॉ. अंजना जैन सिहोरा, डॉ. उमंग जैन, डॉ. यतीश जैन जबलपुर, डॉ. रंजना पटोरिया कटनी, डॉ. पूर्णिमा जैन नोएडा, प्रतिभा जैन कोल्हापुर, श्रीमती शुचिता जैन छिन्दवाडा, प्रो. नीरज जैन आदि शीर्षस्थ विद्वानों ने सिरि भूवलय एवं प्राकृत विषयक विचार व्यक्त किये।

जस्टिस जे. के. जैन, श्री हंसमुख गांधी, श्री हेमंत पाटनी, श्री अतुल छाबड़ा, श्री डी. के. जैन, श्री एम के जैन, श्रीमती कुसुम पांड्या, श्री नीरज जैन, श्री स्वप्निल जैन, श्री चंद्रेश जैन, श्री राजीव निराला, प्रियदर्शी जैन, श्री ओम पाटोदी आदि समाज के अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. अरविन्द कुमार जैन (एडमिनिस्ट्रेटर) ने किया और आभार प्रोफेसर नीरज जैन ने माना।

सीकर शहर में वर्धमान स्तोत्र महामण्डल विधान एवं जिनबिंब विराजमान महोत्सव का हुआ आयोजन

तीर्थंकर सुमतिनाथ जी व तीर्थंकर शान्तिनाथ जी की नवीन अष्ट धातु की प्रतिमा विराजमान की

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

सीकर, 23 जून 2025। सीकर के बजाज रोड स्थित श्री दिगंबर जैन नया मंदिर में 64 मंडलीय श्री वर्धमान स्तोत्र महामण्डल विधान एवं जिनबिंब विराजमान महोत्सव आयोजन किया गया। इस दौरान 64 युगलों ने 64 मंडलीय श्री वर्धमान स्तोत्र महामण्डल विधान का आयोजन किया। इसके बाद ध्वजारोहण कमल किशोर संघी परिवार ने किया। श्री जी के जयकारे लगाए गए। कार्यक्रम में जैन भवन से नया मंदिर तक भव्य जुलूस के साथ विधिविधान से श्री जी को मुख्य वेदी में विराजमान किया गया। कार्यक्रम में समाज के प्रियंक गंगवाल ने बताया कि भगवान शांतिनाथ की मूर्ति विराजमानकर्ता पंडित फूलचंद शास्त्री परिवार सीकर दिल्ली एवं सुमतिनाथ भगवान मूर्ति विराजमानकर्ता स्वर्गीय मिश्रीलाल काला धोद इम्फाल बेंगलुरु थे, सौधर्म इन्द्र बने फतेहचंद काला परिवार धोद, कुबेर इंद्र कमल गंगवाल परिवार सुरेरा वाले, ईशान इंद्र पवन छाबड़ा परिवार पालवास वाले, सानत इंद्र भागचंद सेठी परिवार खुड़ वाले, महेन्द्र इंद्र प्रकाश चंद काला परिवार धोद वाले को सौभाग्य प्राप्त हुआ। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष गोपाल काला मंत्री पवन छाबड़ा ने बताया कि मंगलाष्टक, अभिषेक, शांतिधारा के बाद सभी मांगलिक क्रियाएं हुई। इस दौरान शांतिनाथ जी के सिंहासन मदन लाल पहाड़िया परिवार मांडोता वाले एवं छत्र का सौभाग्य मदन लाल छाबड़ा परिवार पालवास वाले, भामंडल राजकुमार संघी परिवार को मिला और सुमतिनाथ जी का सिंहासन मनोज बज परिवार पलाड़ा वाले, छत्र मुकेश कुमार लुहाड़िया परिवार सुरेरा वाले, भामंडल विमला देवी रतन पाटनी परिवार धोद वाले, सीकर निवासी सूरत प्रवासी को सौभाग्य मिला। श्री जी की शांति धारा फतेह चन्द काला, चिरंजी लाल काला और स्व. फूलचंद शास्त्री परिवार को मिला। कार्यक्रम के दौरान वात्सल्य भोजन विमल कुमार झांझरी (रेटा वाले) कमला देवी धर्मपत्नी श्रीमान स्वर्गीय राजकुमार मानजीका सीकर-सूर भागचंद नरेश कुमार कालीका परिवार पंडित फूलचंद शास्त्री परिवार सीकर-दिल्ली बुद्धि प्रकाश डॉ. अंकुर ठेलिया मंडा वाले सीकर को प्राप्त हुआ। श्री दिगम्बर जैन तेरहपंथ पंचायती नया मन्दिर के सभी सदस्य गोपाल काला, पवन छाबड़ा, विनोद संघी, तेजकरण पिराका, मुकेश लुहाड़िया, अंकित मानजीका, प्रियंक गंगवाल ने लाभार्थी परिवारों का स्वागत सम्मान किया। सांसारिक विषमताओं में लिप्त प्राणी मात्र के कल्याणार्थ मानव जीवन के हितार्थ तथा आत्मिक शान्ति की प्राप्ति दिगम्बर जैन नया मन्दिर में चौसठ ऋद्धि संपन्न 64 मंडलीय श्री वर्धमान स्तोत्र महामण्डल विधान एवं जिनबिंब विराजमान महोत्सव मुनि प्रणम्यसागर महाराज के मंगल आशीर्वाद से पंडित श्री शुभम जैन "शुभांश" बड़ा मलहरा वालों के द्वारा विधिविधान और अंशुल जैन एंड पार्टी सागर के गीत संगीत द्वारा वीतरागी जिनबिम्बों को विराजमान किया गया। कार्यक्रम में सकल दिगंबर जैन समाज एवं आसपास के क्षेत्र के धर्म प्रेमी बिंदु उपस्थित थे और जैन समाज के विभिन्न संगठनों ने व्यवस्था में सेवा प्रदान किया।

नि:शुल्क रोग निदान रक्तदान शिविर में 525 लोगों ने लिया स्वास्थ लाभ

सुमत लल्ला

नागपुर। परवार पूरा मंदिर प्रांगण इतवारी नागपुर में नि:शुल्क रोग निदान रक्तदान शिविर 23 जून को प. पू. संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महामुनिराज, प. पू. विद्याशिरोमणि आचार्य श्री समय सागरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य प. पु. मुनिश्री विराटसागरजी महाराज नागपुर, नगर गौरव मुनिश्री निस्संग सागर जी महाराज के आशीर्वाद से प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी आयोजित किया गया। ईश्वर का स्मरण करते हुए शिविर की शुरुआत हुई। शिविर में लगभग 525 लोगों ने जाँच में वेट, बी ऍम आई, बी पी, एस पि ओ, शुगर, इ सी जी आदि जाँच का लाभ लिया। किम्स - किंग्सवे हॉस्पिटल नागपुर के द्वारा टीम में डॉ. राजेंद्र बरोकर, डॉ. शैलेन्द्र गंजेवार, डॉ. अशी परगनिहा चांडक ने शिविर में जांच के पश्चात् स्वास्थ सम्बन्ध जानकारी दी। शिविर के संयोजक सुमत लल्ला जैन ने जानकारी दी कि रोगनिदान, रक्तदान शिविर 26 वर्षों से सेवाएं दे रहे हैं और अनेक संस्थाओं के सहयोग से भविष्य में भी ऐसी सेवाएं प्रदान करने का आश्वासन दिया। ऐसे ही शुभ कार्य करने के लिए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र जी फड़णवीस, केंद्रीय मंत्री भारत सरकार श्री नितिन जी गडकरी ने पत्र के माध्यम से लल्ला जी को बधाई - शुभकामनायें दीं। शिविर में रौशनी फाउंडेशन की टीम राजेंद्र जैन, अरविन्द क्षत्रिय, गजानन पाटिल, मधुकर वनकर ने नेत्र दान के प्रति जागरूकता का कार्य किया। शिविर सहयोगी संस्थाए श्री भा. दि. जैन महासभा, जैन राजनैतिक चेतना मंच, गौवंश उपयोगी संस्था, दि. जैन परवार मंदिर ट्रस्ट, एस एल ग्रुप, जैन नि:सही संस्थान रहे। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से ट्रस्ट के उपाध्यक्ष अजय बडकुर, ट्रस्टी डॉ. सुरेश मोदी, बाला पलसापुरे, सुरेश आग्रेकर, विजय उदापुरकर, डॉ. संतोष मोदी, प्रशांत बंटी जैन, राजेश बढकूर, अरविन्द जैन, मुकेश जैन, संजय महाजन, पवन झांझरी, जिनेन्द्र लाला, विजय गब्बर ने शिविर में विशेष सहयोग दिया।

हमारी आत्मा में अद्भुत शक्ति....

- आर्यिका पूर्णमती माताजी

दिल्ली। दिगंबर जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रमुख शिष्या विदुषी आर्यिका पूर्णमति माताजी का रविवार 22 जून को पहली बार श्री दिगंबर जैन लाल मंदिर चांदनी चौक दिल्ली पधारने पर भव्य स्वागत किया गया। अनेक श्रद्धालुओं के साथ माताजी को श्री खंडेलवाल दिगंबर जैन मंदिर राजा बाजार कनाट प्लेस, दिल्ली गेट जैन मंदिर से अंसारी रोड होते हुए शोभायात्रा के रूप में लाया गया। जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन पुनीत जैन आदि ने विनयांजलि अर्पित की। माताजी ने कहा कि हमारी आत्मा में अद्भुत शक्ति है, उसे बाहर नहीं अंदर ही खोजने की जरूरत है। संघ में 7 माताजी व 15 ब्रह्मचारी बहिनें हैं। सायंकाल माताजी ने चाँदनी चौक क्षेत्र के प्राचीन मंदिरों के दर्शन किए।

भगवान भरत का महामस्तकाभिषेक

पुनीत जैन

दिल्ली। श्री दिगम्बर जैन मंदिर ज्ञान स्थली तीर्थ शहीद भगत सिंह मार्ग कनाट प्लेस में आचार्यश्री श्रुत सागर मुनिराज के सानिध्य में स्याद्वाद युवा क्लब ने भगवान भरत की 31 फिट ऊँची खड्गासन् प्रतिमा का महा मस्तकाभिषेक किया। आयोजन में मुख्य अतिथि श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष गजराज जैन थे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जी गंगवाल ने युवाओं को जैन समाज व धर्म की रक्षा के लिये आगे आने के लिए आह्वान किया।

चातुर्मास के चार आयाम

प्रो. अनेकांत कुमार जैन

चातुर्मास वह है जब चार महीने चार आराधना का महान अवसर हमें प्रकृति स्वयं प्रदान करती है। अतः इस बहुमूल्य समय को मात्र प्रचार में खोना समझदारी नहीं है।

चातुर्मास के चार मुख्य आयाम हैं - सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप, इन चार आराधनाओं के लिए ये चार माह सर्वाधिक अनुकूल रहते हैं, आत्म कल्याण के सच्चे पथिक इन चार माह को महान अवसर जानकर मन-वचन और काय से इसकी आराधना में समर्पित हो जाते हैं। आगम में भी कहा गया है -

उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वाहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसणणाणचरित्तं तवाणमाराहणा भणिया।
(भगवती आराधना/गाथा 2)

अर्थात् सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र व सम्यक्तप इन चारों का यथा योग्य रीति से उद्योतन करना, उनमें परिणति करना, इनको दृढ़ता पूर्वक धारण करना, उसके मंद पड़ जाने पर पुनः पुनः जागृत करना, उनका आमरण पालन करना आराधना कहलाती है।

आधुनिकता और आत्ममुग्धता के इस दौर में जब चातुर्मास के मायने मात्र मंच, माइक, मीडिया और मात्सर्य तक ही सीमित करने की नाकाम कोशिशें हो रहीं हों तब ऐसे समय में हमें उन शाश्वत मूल्यों को अवश्य याद रखना चाहिए जिनकी संवृद्धि के लिए चातुर्मास आते हैं।

आपको स्मरण होगा चातुर्मास के दौरान, विशेषकर दशलक्षण पर्व में तत्त्वार्थ सूत्र के स्वाध्याय का बहुत महत्त्व है, उसके आरम्भ में मंगलाचरण से भी पूर्व कुछ पद्य पढ़े जाते हैं, उनमें भी यह गाथा पठनीय होती है।

एक गृहस्थ को भी यथासंभव ये चार आराधनायें करणीय हैं। हमें लाख उपाय करके भी सबसे पहले सम्यग्दर्शन आराधना प्राप्त करना है, उसके लिए वीतरागी आप्त, आगम और तपस्वी के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा रखते हुए देह और आत्मा की भिन्नता का अनुभव करते हुए अपने शुद्ध आत्मतत्त्व की पहचान करनी है उसे जानना है।

सम्यग्ज्ञान आराधना में आप्त के वचनों को, उनके गूढार्थ को, भावार्थ को स्याद्वाद नय से, स्वाध्याय के माध्यम से वस्तु स्वरूप का सही ज्ञान प्राप्त करते हुए भेद विज्ञान को प्राप्त करना है। सम्यग्चारित्र आराधना में यथासंभव व्रतादि संयम का पालन करते हुए आत्मा की अनुभूति में उतरना है। सम्यक्तप आराधना में अन्तरंग और बहिरंग तप का सच्चा स्वरूप समझकर बाह्य प्रतिकूलताओं को समता पूर्वक सहकर अपने मन को धर्म में स्थिर रखने का प्रयास करना है, आत्म ध्यान का अभ्यास करना है।

यह महज सिर्फ एक संयोग नहीं है कि आत्मा की आराधना की मुख्यता वाले अधिकांश आध्यात्मिक पर्व भी इन्हीं चार महीनों में ही आते हैं।

यही कारण है कि महापुराण (5.231,19.14-16) पांडवपुराण (19.263, 267) आदि ग्रंथों में भी कहा है कि ये चार आराधनायें भव सागर से पार होने के लिए ये नौका स्वरूप हैं। अनेक महाविद्याएं भी आराधना से प्राप्त होती हैं। वास्तविक धर्म प्रचार और प्रभावना भी वे ही कर पाते हैं जो सच्चे मन से आराधनायें करते हैं। वर्ष में बारह मास होते हैं, उसमें भी मुख्यता से आठ महीने धर्म का प्रचार और चार महीने धर्म का आचार-ये संतुलन यदि रखें तो हम दोनों कार्य बहुत सफलता से कर सकते हैं किन्तु हम इन चार महीनों को भी मात्र प्रचार में झोंक दें तो खुद से ही धोखा करेंगे और किसी से नहीं।

आगरा में चातुर्मास घोषणा

आगरा, 22 जून। बेलनगंज स्थित कचौरा बाजार की जैन धर्मशाला में विराजमान सर्वाभूषण आचार्य चैत्य सागर जी महाराज को प्रातःकालीन प्रवचन सभा में आगरा दिगंबर जैन परिषद आगरा व अन्य शैलियों ने चातुर्मास के लिए श्रीफल भेंट किया। प्रवचन सभा में बोलते हुए पूज्य आचार्य चैत्य सागर जी ने घोषणा की कि इस वर्ष का उनका वर्षायोग आगरा के अतिशय क्षेत्र नसिया जी (अंतर्गत आगरा दिगंबर जैन परिषद) में सम्पन्न होगा, पूरा आगरा रहे तैयार। आगरा दिगम्बर जैन परिषद के तत्वाधान में 2025 का चातुर्मास नसिया जी में सम्पन्न होगा।

मांगीतुंगी जी में पावन वर्षायोग

परम पूज्य आचार्य श्री वरदत्त सागर जी गुरुदेव के परम शिष्य मुनिश्री महिमा सागर जी ससंघ - पूज्य मुनि श्री दिव्य सेन जी, पूज्य मुनि श्री परम सागर जी, पूज्य आर्यिका श्री सुग्रीवमती माताजी, पूज्य आर्यिका श्री सुभद्रामती माताजी, पूज्य क्षुल्लिका श्री सम्मेद श्री माताजी का चातुर्मास मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में होगा। मुनि संघ के पावन सानिध्य में जुलाई 3 तारीख से 10 तारीख तक मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में जिन सहस्त्रनाम और चारित्र शुद्धि विधान होने जा रहा है। 9 जुलाई को चातुर्मास स्थापना करेंगे।

षष्ठम देवलोक वर्ष

जन्म
21-07-1923
(शनिवार)

देवलोक
01-07-2019
(सोमवार)

आर्यिका श्री 105 अमरमती माताजी

(गृहस्थ अवस्था में श्रीमती सोहनी देवी सेठी)
धर्मपत्नी स्व. श्री हरक चंद जी जैन (सेठी) डेह निवासी

रविवार 30-06-2019 को पूज्य गणिनी आर्यिका नंगमती माताजी से जैनेश्वरी आर्यिका दीक्षा लेकर आर्यिका श्री 105 अमरमती माताजी नाम पाया।

परम पूज्य आर्यिका श्री 105 अमरमती माताजी के चरणों में समस्त सेठी परिवार की ओर से

शत-शत नमन, शत शत वंदन एवं विनम्र विनयांजलि
हम सब आपके बताये हुये मार्ग पर सदैव चलते रहेंगे।

विनयावनत

सेठी परिवार

तिनसुकिया | सिलचर | गुवाहाटी | कोलकाता | नई दिल्ली | लखनऊ | सीतापुर | गोरखपुर

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गड़मूल नक्षत्र कौन-कौन से होते हैं? - सारिका जैन, विकासपुरी, दिल्ली
उत्तर - अश्वनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती ये छः नक्षत्र गड़मूल नक्षत्र होते हैं, जिनकी शान्ति करना जरूरी होता है।

प्रश्न 2. मेरी स्मरण शक्ति कमजोर है, क्या उपाय करें? - रोशन लाल जैन, अलवर (राज.)
उत्तर - श्री भक्तामर जी का 6वां काव्य स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाला होता है। इसकी एक माला अवश्य घर पर फेरें।

प्रश्न 3. बेटे की शादी का योग कब है? काफी प्रयास करने के बाद भी सम्बन्ध नहीं बन पा रहा है - सुमन जैन, सूरत (गुजरात)
उत्तर - लगभग 5 माह पश्चात् शादी का योग है, तब तक श्री शान्तिनाथ जी का चालीसा पढ़ें।

प्रश्न 4. शानि की ठैय्या कितने समय के लिये आती है? राजीव जैन, मानसरोवर पार्क, दिल्ली
उत्तर - शानि की ठैय्या लगभग ढाई वर्ष के लिये आती है, इस दौरान श्री मुनिसुव्रतनाथ जी का चालीसा व जाप करनी चाहिये।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062
8826755078

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009
कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000
महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132
कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985
प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com
परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर
मो. 09425412374
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334
सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com
सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108
लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344
दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

महावीराचार्य पुरस्कार - 2025 प्रो. आर. एस. शाह (पुणे) को

2021 में दिग. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा प्रो. अनुपम जैन, इन्दौर की पहल पर स्थापित महावीराचार्य पुरस्कार-2025 पूना के प्रो. आर. एस. शाह को जैन गणित के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य हेतु पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ पावन सान्निध्य में श्रुत पंचमी के अवसर पर 31 मई 2025 को अयोध्या जी में समर्पित किया गया। इस पुरस्कार के अन्तर्गत रू 51,000.00 की सम्मान राशि, शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति समर्पित की गई। ज्ञातव्य है कि पूर्व में यह पुरस्कार प्रो. आर. सी. गुप्त, झांसी (2021- जैन गणित के क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान हेतु) प्रो. एस. सी. अग्रवाल, मेरठ (2022- जैन गणित शोध के प्रोत्साहन हेतु), प्रो. एस. के बंडी, इंदौर (2023-जैन ज्योतिर्विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान हेतु) एवं प्रो. पद्मावथम्मा, मैसूर (2024- गणितसार संग्रह के कन्नड़ अनुवाद हेतु) को प्रदान किया जा चुका है। डॉ. सविता जैन, शीतल तीर्थ-रतलाम के मंगलाचरण से सभा प्रारम्भ हुई। स्वागत उद्बोधन संस्थान के मंत्री श्री मनोज जैन (मेरठ) ने दिया। निर्णायक मण्डल के विद्वान विशेषज्ञ सदस्य प्रो. एस. सी. अग्रवाल (मेरठ) ने 2025 का पुरस्कार श्री आर. एस. शाह को प्रदान करने की घोषणा की। पश्चात् डॉ. अनुपम जैन ने गत 4 वर्ष के विजेताओं के कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। घोषणा के उपरान्त माननीय कुलगुरु जी प्रो. सिंघई (इन्दौर), प्रो. मूर्ति (दिल्ली), प्रो. अभय कुमार जैन (लखनऊ) एवं प्रो. विपिन जैन (मुरादाबाद), प्रो. अनुपम जैन सहित प्रायोजक परिवार ने पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के नेतृत्व में प्रो. आर. एस. शाह (पुणे) को शाल, श्रीफल, प्रशस्ति एवं सम्मान राशि से सम्मानित किया। अपने कृतज्ञ उद्बोधन में प्रो. शाह ने कहा कि डॉ. अनुपम जी से मेरी पहली मुलाकात 2009 में हुई थी। उन्होंने मुझे षट्खंडागम ग्रंथ एवं कर्म सिद्धान्त के गणित के अध्ययन की प्रेरणा दी। 2 लाख रूपये की फैलोशिप भी दिलाई। मैंने कर्म सिद्धान्त की गणित पर जो अध्ययन किया है। वह केवल 1: है। मैने जब इन 39 ग्रंथों के गणितीय भागों के अध्ययन का क्रम पूर्ण किया एवं पंचाग देखा तो आश्चर्यजनक रूप से उस दिन श्रुत पंचमी थी एवं आज भी श्रुतपंचमी है।

मेरे पास षट्खंडागम के 5 खंडों पर धवला टीका (16), कषाय प्राभृत पर जयधवला टीका (16) एवं महाबंध (07) कुल 39 ग्रंथों पर विस्तृत परिणाम में नोट्स सुरक्षित हैं। जिनका इस्तेमाल कर कोई भी Ph. D कर सकता है। षट्खंडागम में भंग समुत्कीर्तन के नाम से Combinatorics का अच्छा विवेचन है। आगम में अक्षरों की संख्या $2^{64}-1$ इसी से निकाली गई है। मैं अनुपम जी एवं संस्थान को इस सम्मान हेतु धन्यवाद देता हूँ एवं विश्वास दिलाता हूं कि जब तक जान में दम है मेरा जैन गणित का अध्ययन जारी रहेगा। मेरा अनुपम जी से अनुरोध है कि युवाओं को प्रेरित करते रहें, उन्हें स्कॉलरशिप देवें, जिससे इस क्षेत्र में बढ़ें। - डॉ. सविता जैन

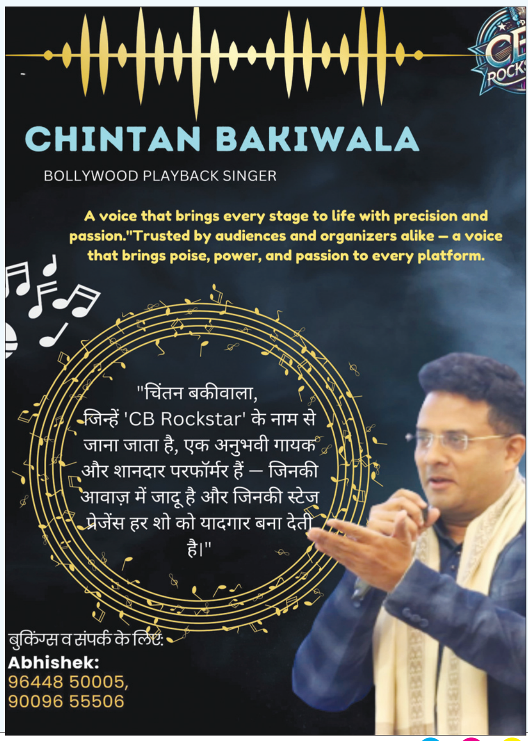

एशिया केक ऑस्करर्स में जयपुर की मोनिका शाह ने जीता मास्टर केक आर्टिस्ट ऑस्कर अवॉर्ड

उदयभान जैन, जयपुर

जयपुर। पाककला एवं डिजाइनिंग आर्ट में निपुण मोनिका जैन शाह, जयपुर निवासी ने श्रीलंका में आयोजित एशिया केक ऑस्कर 2025 में भाग लेकर मास्टर केक आर्टिस्ट का प्रतिष्ठित ऑस्कर अवॉर्ड जीतकर संपूर्ण भारत देश का नाम रोशन किया है। इस प्रतियोगिता में पूरे एशिया से विभिन्न बेकर्स और केक आर्टिस्ट्स ने भाग लिया था। शाह द्वारा जीता यह अवार्ड इस बात का प्रतीक है कि अगर मेहनत, लगन, आत्मविश्वास और मजबूत इरादे हों - तो एक सपना, एक पहचान बन सकता है। मोनिका शाह के इस सफलता व सम्मान से परिवार व समाज का गौरव बढ़ाया, शाह के लिए समाज व सगे सम्बन्धितों, परिचितों ने बधाइयां प्रेषित की हैं।

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

जयपुर शहर के कीर्ति नगर में मुनि आदित्य सागर जी महाराज ससंघ का जयकारों के बीच हुआ भव्य मंगल प्रवेश

जीवन में सुख शांति अर्जन में नहीं वि

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 22 जून। हम अच्छे जीवन के लिए प्रयास करते हैं किन्तु उपाय नहीं करते। गुरुओं की सन्निधि प्राप्त होना सबसे बड़ी सम्पति है। जीवन में सुख, सम्पति छोड़ने में है जोड़ने में नही। ये उद्गार श्रुत संवेगी महाश्रमण आदित्य सागर मुनिराज ने कीर्ति नगर के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में मंगल प्रवेश के पश्चात आयोजित धर्म सभा में व्यक्त किये। मुनि श्री ने आगे कहा कि जिसके अन्तरंग में संतोष है वो सबसे बड़ा सुखी व्यक्ति है। जीवन में शांति एवं संतोष, अर्जन में नहीं विसर्जन में है। प्राप्ति का आनन्द छोड़ने पर ही है। वक्त की इस दौड़ में जो संतोषी है वो ही सुखी है। हर व्यक्ति को अपना सम्मान, इज्जत बनाकर रखनी जरुरी है।

इससे पूर्व धर्म सभा में समाजश्रेष्ठी कुशल ठोलिया, मधु ठोलिया एवं विकास सेठी ने भगवान पार्श्वनाथ के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन किया। मुनि भक्त पुष्पेन्द्र कुमार संतोष कुमार बयाना वालों ने पाद प्रक्षालन किया। कोटा निवासी मुनिभक्त संजय बड़जात्या ने मुनि श्री को जिनवाणी भेंट की। नन्हीं बालिकाओं ने मंगल मंगल घड़ी..... मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में बांसवाड़ा की गायिका दिशी जैन ने भक्ति रस बरसाकर उपस्थित श्रद्धालुओं को झूमने को मजबूर कर दिया, इस मौके पर 2 वर्षों में मुनि श्री ससंघ का 2000 किलोमीटर से अधिक का विहार करवाने वाले संघपति भीलवाड़ा निवासी विकास सेठी सहित अतिथियों का स्वागत मंदिर कमेटी के अध्यक्ष प्रेम कुमार जैन, मंत्री जगदीश जैन, प्रचार मंत्री आशीष बैद आदि ने किया। इस दौरान श्री वीर सेवक मण्डल जयपुर के सदस्यों एवं जनकपुरी मंदिर कमेटी ने श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम में धर्म सभा में समाजश्रेष्ठी उमराव मल संघी, अशोक जैन नेता, महेश काला, सुनील बख्शी, प्रदीप जैन, विनोद जैन कोटखावदा, राजीव जैन गाजियाबाद, मनोज झांझरी, धर्म चन्द पहाड़िया, सुधीर जैन, हेमन्त सोगानी, जे. एम. जैन, सुभाष बज, चेतन जैन निमोडिया, कैलाश छाबड़ा, उदयभान जैन, प्रकाश गंगवाल, पदम बिलाला, राजीव पाटनी, भारत भूषण जैन, अनिल छाबड़ा, भानू छाबड़ा, योगेश टोडरका, राकेश छाबड़ा, नरेश कासलीवाल, रमेश बोहरा, अरुण काला मटरु, राज कुमार छाबड़ा, सुरेन्द्र जैन, शांति लाल जैन, रविन्द्र बिलाला, सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित थे, कार्यक्रम में मंच संचालन मनीष बैद, अक्षया सेठी ने किया।कार्यक्रम में जुलूस के कीर्ति नगर जैन मंदिर पहुंचने पर महिला मण्डल की सदस्याओं ने सिर पर मंगल कलश लेकर अगवानी करने के बाद प्रबंधकारिणी समिति ने पाद प्रक्षालन एवं महिला मंडल ने मंगल आरती की। जुलूस में महिला मण्डल की सदस्याऐं एवं श्रद्धालु बड़ी संख्या में नाचते गाते शामिल हुए। श्री वीर सेवक मण्डल जयपुर के सदस्यों ने जुलूस व्यवस्था संभाली। मंदिर समिति के अध्यक्ष प्रेम कुमार जैन एवं मंत्री जगदीश जैन के मुताबिक आहार चर्या के बाद संतों ने सामायिक की। दोपहर में जिनवाणी चर्चा की गई। सायंकाल गुरु भक्ति, आरती के बाद श्रुत समाधान कार्यक्रम किया गया।

दिगम्बर जैन यात्रा महासंघ भगवान महावीर के सिद्धांतों तथा अहिंसा शाकाहार के प्रचार प्रसार करने के लिए 9 दिवसीय धार्मिक यात्रा करवाएगा

संयोजकों की हुई नियुक्ति : अमर चन्द दीवान खोराबीसल को बनाया मुख्य संयोजक

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर शहर से दिगंबर जैन यात्रा महासंघ के तत्वाधान में 9 दिवसीय धार्मिक यात्रा दल की 12 जुलाई को भट्टारक जी की नसियां से होगी। रवानगी धार्मिक पद यात्राओं एवं धार्मिक बस एवं रेल यात्राओं के माध्यम से जैन संस्कृति की रक्षा एवं धर्म प्रभावना करने के लिए समर्पित सन् 1986 में स्थापित श्री दिगम्बर जैन पद यात्रा संघ जयपुर के तत्वावधान में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भगवान महावीर के सिद्धांतों, अहिंसा एवं शाकाहार के प्रचार-प्रसार तथा सिद्धक्षेत्रों, तीर्थक्षेत्रों की 9 दिवसीय धार्मिक यात्रा का आयोजन किया जाएगा। यह निर्णय पदयात्रा संघ की कार्यकारिणी समिति की मीटिंग में लिया गया। यह यात्रा भक्ति, साधना, तीर्थ दर्शन और आत्मिक उन्नति का अनुपम संगम होगी। कार्यक्रम में संघ के संरक्षक सुभाष चन्द जैन ने बताया कि यात्रा के लिए अमरचंद दीवान, खोराबीसल को मुख्य संयोजक बनाया गया है। संघ के कार्यकारिणी सदस्य सुरेश ठोलिया, विनोद जैन 'कोटखावदा', मनीष लुहाड़िया, जिनेन्द्र जैन को धार्मिक बस यात्रा का संयोजक बनाया गया है।

यात्रा दल के मुख्य संयोजक अमर चन्द दीवान खोराबीसल ने बताया कि 9 दिवसीय धार्मिक यात्रा दल जयपुर से शनिवार, 12 जुलाई को प्रातः भट्टारक जी की नसियां से वातानुकूलित बसों द्वारा रवाना होगा। यात्रा दल जयपुर से रवाना होकर भरतपुर नसियां, मुरेना ज्ञान तीर्थ, सोनागिर जी, खजुराहो, कुण्डलपुर बड़े बाबा, बहोरीबंद, जबलपुर, रामटेक, नेमगिरी, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ, कारंजा, भातकुली, मुक्तागिरी, चिकलधारा (हिल स्टेशन), भोजपुर, भोपाल, चांदखेडी, कोटा होता हुआ रविवार, 20 जुलाई को रात्रि में वापस जयपुर लौटेगा। संयोजक विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि यात्रा के दौरान अभिषेक, शांतिधारा, सामूहिक पूजा अर्चना, पर्वत वन्दना, दिगम्बर जैन साधु संतों के दर्शन एवं प्रवचन लाभ के साथ भगवान महावीर के सिद्धांतों, अहिंसा शाकाहार का प्रचार प्रसार किया जाएगा।

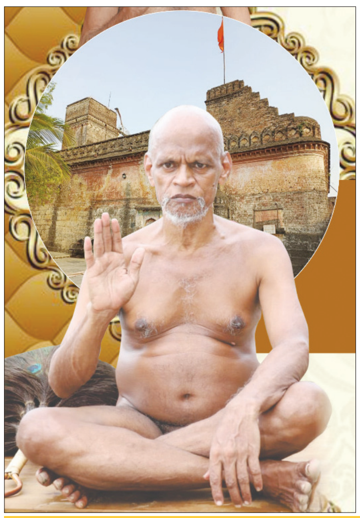

37 वर्षों के बाद गुना आयेंगे निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर, प्रथम बार होगा चातुर्मास

अभिषेक जैन लुहाड़िया, रामगंजमंडी

गुना। आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के गृहस्थ अवस्था के भाई निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर महाराज का आगामी चातुर्मास गुना नगर में होने की संभावना है, उनका गुना में प्रथम बार चातुर्मास होगा। इससे पूर्व मुनिश्री 1988 में गुना नगर में आए थे। महाराज श्री 12 पिच्छिधारी साधु संतों के साथ गुना की ओर मंगल विहार कर रहे हैं। उनके दर्शन हेतु गुना नगर के समाज बंधु नरयावली पहुंचे। सकल दिगंबर जैन समाज गुना की प्रबंधकारिणी समिति ने महाराज श्री को गुना चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। संभावना व्यक्त की जा रही है कि महाराज श्री का मंगल प्रवेश तीन से 5 जुलाई के मध्य गुना नगर में होगा।

गुना नगर में हर्ष का वातावरण है एवं आगवानी हेतु तैयारियां जोरशोर से चल रही हैं। रविवार की बेला में महाराज श्री संघ की आहारचर्या जरूआखेड़ा में संपन्न हुई, सोमवार की बेला में महाराज श्री संघ का आगमन खुरई नगर में होगा। सैकड़ों श्रद्धालु महाराज श्री के साथ पैदल विहार करते हुए पुण्य का अर्जन कर रहे हैं।

आचार्य श्री 108 प्रमुख सागर जी मुनिराज ससंघ का पावन वर्षायोग कोलकाता में

आचार्य श्री प्रमुख सागर जी मुनिराज संसंघ का मंगल विहार कोलकाता की ओर चल रहा है, गत दिनों सुमतिनाथ जिन चैत्यालय तेघरिया में अल्प प्रवास हेतु सभी गणमान्य भक्तों के द्वारा मुनि संघ को श्रीफल भेंट किया गया। आचार्य श्री संघ का संभावित मंगल प्रवेश कोलकाता की धन्यधरा श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन उपवन मंदिर बेलगाछिया जी में 29 जून को होने के समाचार मिले हैं।

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गज़ट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।